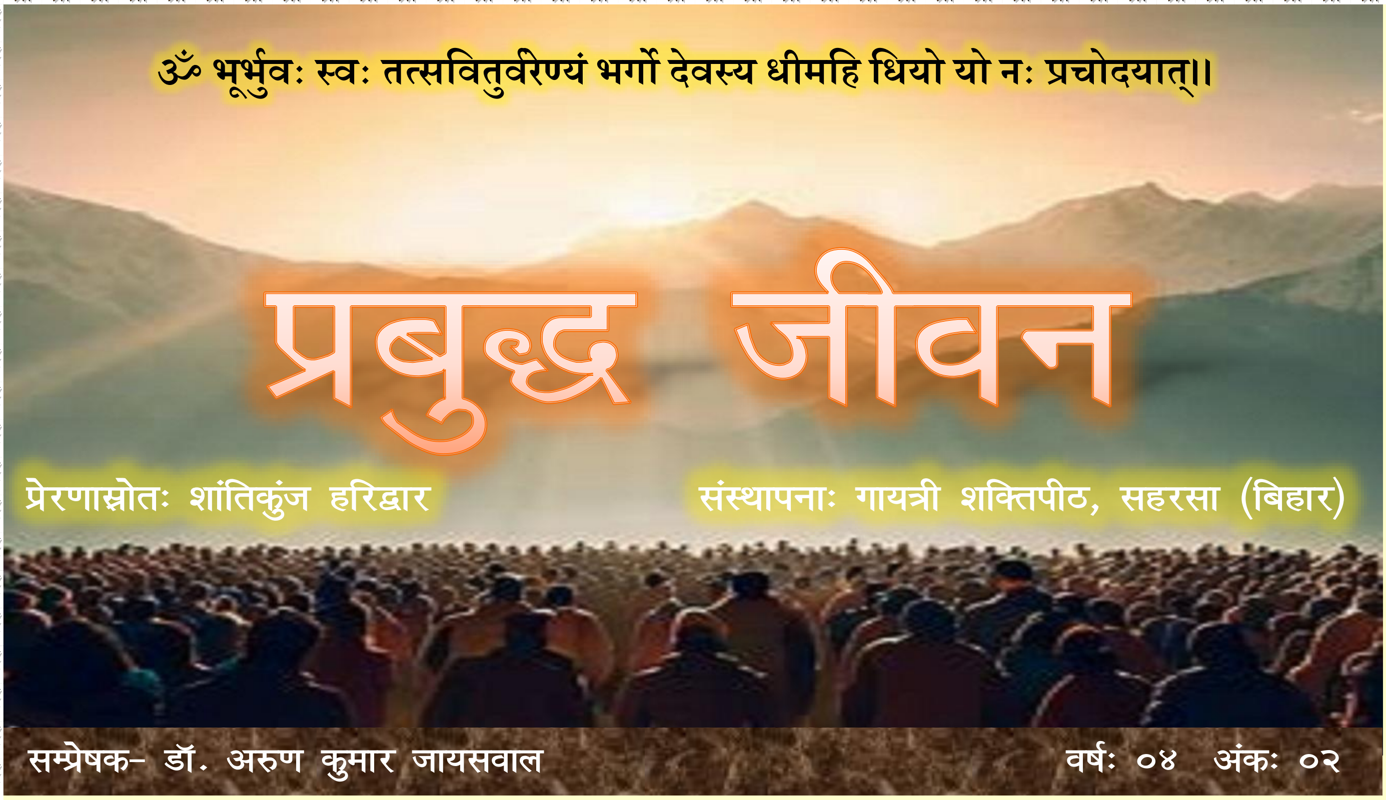

'तपस्वी नागरिक-बलवान राष्ट्र

सुख और कल्याण की कामना मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है, पर उसका वास्तविक स्वरूप वही जान पाता है जो तप और अनुशासन के पथ पर चलता है। ऋषियों ने यह भली-भाँति समझ लिया था कि बिना आत्मशुद्धि के न व्यक्तिगत उत्थान संभव है, न सामाजिक और न ही राष्ट्रीय। इसलिए उन्होंने सबसे पहले तप को अपनाया।

यह तप केवल व्रत और नियम नहीं है, बल्कि जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाने की अग्नि है जिसमें तपकर राष्ट्र के नागरिक संयमित, साहसी और आदर्शनिष्ठ होते हैं और ऐसा ही राष्ट्र बलवान बनता है। ऋषियों का पुरुषार्थ व्यक्तिगत मुक्ति तक सीमित नहीं था; उन्होंने अपनी साधना से समाज को दिशा दी, राष्ट्र को ओज दिया और जनमानस में आत्मगौरव जगाया। तप से जन्मा आत्मबल ही राष्ट्र की वास्तविक शक्ति है।

आज जब सुविधा और भोग को सुख मान लिया गया है, तब यह स्मरण करना अत्यंत आवश्यक है कि तप ही वह प्रयोगशाला है जहाँ से चरित्र, नेतृत्व और राष्ट्रनिर्माता जन्म लेते हैं। बिना आत्मसंयम के प्राप्त वैभव राष्ट्र को कमजोर करता है और बिना साधना के किया गया कार्य दिशाहीन होता है। जो राष्ट्र तपस्वी नागरिकों को जन्म देता है, वही इतिहास बनाता है।

हृदय से हृदय तक

भारतीय संस्कृति में हृदय से हृदय को स्नेह, विश्वास और उत्तरदायित्व से जोड़ने वाला पर्व है- रक्षाबंधन। यह केवल कलाई पर बाँधा जाने वाला धागा नहीं, बल्कि वह संकल्प है जो हृदय में जन्म लेता है और जीवन-व्यवहार में प्रकट होता है। रक्षाबंधन का मूल भाव रक्षा है- केवल शारीरिक सुरक्षा नहीं, बल्कि सम्मान, विश्वास और आत्मसम्मान की रक्षा। जब यह भाव जाग्रत होता है, तब यह पर्व भावनाओं को सही दिशा देता है और समाज को संतुलन प्रदान करता है।

पौराणिक और ऐतिहासिक परम्पराओं में रक्षाबंधन का स्वरूप व्यापक रहा है। देव-दानव संग्राम में इन्द्राणी द्वारा इन्द्र की रक्षा के लिए बाँधा गया रक्षा-सूत्र, राजा बलि और देवी लक्ष्मी का प्रसंग, द्रौपदी द्वारा श्रीकृष्ण की उँगली पर वस्त्र बाँधना- ये सभी घटनाएँ इस बात का संकेत हैं कि रक्षा का संबंध रक्त से नहीं, बल्कि भाव और कर्तव्य से जुड़ा होता है। रक्षाबंधन ने समय-समय पर सामाजिक मर्यादा और नैतिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ किया है।

समय के साथ यह पर्व भाई-बहन के स्नेह का प्रतीक बन गया। बहन भाई की कलाई पर रक्षा-सूत्र बाँधकर उसके दीर्घायु और सद्बुद्धि की कामना करती है और भाई केवल उपहार देकर नहीं, बल्कि जीवन भर उसकी रक्षा का व्रत लेकर इस बंधन को स्वीकार करता है। यह रक्षा केवल बाहरी संकटों से नहीं; बल्कि अन्याय, अपमान और असमानता से भी जुड़ी है। बहन की गरिमा, उसकी स्वतंत्रता और उसकी अस्मिता की रक्षा- यही रक्षाबंधन का वास्तविक अर्थ है।

आज के समय में रक्षाबंधन का स्वरूप और अधिक व्यापक अर्थ चाहता है। समाज में जहाँ एक ओर संबंधों की गर्माहट कम होती जा रही है, वहीं दूसरी ओर स्त्रियों की सुरक्षा और सम्मान गंभीर चुनौती बने हुए हैं। ऐसे में रक्षाबंधन केवल पारिवारिक रस्म न रहकर सामाजिक चेतना का पर्व बनना चाहिए। भाई का दायित्व केवल बहन की व्यक्तिगत रक्षा तक सीमित न रहे, बल्कि हर नारी के प्रति सम्मानजनक व्यवहार में परिवर्तित हो।

रक्षाबंधन यह सिखाता है कि बहन को निर्बल मानकर उसकी रक्षा करने का भाव नहीं; बल्कि उसे समान, सक्षम और सम्मानित मानकर साथ चलने का संकल्प आवश्यक है। जब भाई बहन के स्वप्नों, शिक्षा और आत्मनिर्भरता की रक्षा करता है, तब यह पर्व अपने उद्देश्य को पूर्ण करता है। इसी प्रकार बहन भी भाई को सद्बुद्धि, संयम और नैतिकता की राह पर बनाए रखने का स्नेहपूर्ण दायित्व निभाती है।

रक्षाबंधन हृदय को संवेदनशील बनाता है और संबंधों में उत्तरदायित्व का बोध कराता है। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि रक्षा का वास्तविक स्वरूप शक्ति-प्रदर्शन नहीं, बल्कि करुणा, सजगता और न्याय है। इस बार रक्षाबंधन आपके जीवन में केवल एक पर्व के रूप में नहीं, बल्कि समाज को सुरक्षित और संतुलित बनाने वाली जीवन-दृष्टि बनकर आए, ऐसी हार्दिक शुभकामनाऐं।

- डॉ. अरुण कुमार जायसवाल

स्वर्ग सीढी

हमारे कर्म ही हमारे स्वर्ग या नरक की सीढी बनते हैं । हम अगर अपने कर्म को कर्मफलों के निर्धारण के अनुसार सोच-समझकर विवेकपूर्ण ढँग से करें तो समझिए हमारे लिए हमारे मन के स्वर्ग की सीढी पक्की है । हम भगवान को अपना आदर्श मानते हैं तो उनकी ओर अगर हम देखें तो इस गुत्थी को हम समझ पाएंगे कि भगवान अपने सभी अवतारों में अपने कर्मों से ही अपनी भगवत्ता को युग और परिस्थिति के अनुसार प्रकट करते रहे हैं और मानवजाति का कार्य होता रहा है। पर यह कहना कि ये जन्म से ही अवतार रहे कर्म इन्होंने नहीं किया तो यह गलत होगा । श्रीराम वन - वन भटके, श्रीकृष्ण ने भटके हुओं का सतत मार्गदर्शन किया, बुद्ध और महावीर ने कठोर तप किया, ईसा ने सर्वकल्याण के लिए सूली पर लटकना स्वीकार कर लिया तो इन सबने अपने-अपने कर्मों से सिद्ध किया कि उनमें ईश्वरत्व उतरा है और जो भी उनके बताए मार्ग पर चलेगा वह ईश्वरत्व का प्रत्यक्षीकरण अपनी ही आत्मा में, अपने ही स्वरूप में कर सकता है । तो यही है कर्मफलविधान का सच कि हम अपने मनों में अगर ईश्वरत्व का बीज बोएंगे तो ईश्वरत्व का फल पाएंगे और अगर दुर्गुणों का, दुष्टता का बीज बोएंगे तो दुष्टत्व का फल पाएंगे और अगर थोड़ा ईश्वरत्व और थोड़ा दुष्टत्व का बीज बोएंगे तो थोड़ा अमृत थोड़ा विष पाएँगे तो मन में पल रहा विष ही नरक है और अमृत ही स्वर्ग है ।

बस हमें मन से विष को हटाना है और अपने अमृतपुत्र स्वरूप का चिन्तन करते हुए सतत अमृत का पान करना है । शास्त्रों ने हमें अमृतस्य पुत्राः कहा हैए अर्थात् हम अमृत के पुत्र हैं । अमृत कौन ईश्वर जो जन्म.मृत्यु से परे है । हम उनकी सन्तान हैं फिर हममें विष भरा कैसे क्या हमनेए या उनके शत्रु दानवों से । मन से विषैले, तन से विषैले तभी वे स्वर्ग में नहीं नरक में वास करते हैं । वे नारकीय मनःस्थिति के स्वामी हैं । जैसी मनःस्थिति वैसी ही परिस्थिति और जैसी परिस्थिति वैसी ही परिकर की स्थिति तो मानव को अपने मन के षड् रिपुओं की खबर लेनी होगी । जिसके मन के अन्दर कामनाओं का विष हैए क्रोध की अग्नि लपलपा रही हैए लोभ का राक्षस घुसा हुआ हैए मोह का जाल हैए मदान्धता सिर चढकर बोल रही हैए ईर्ष्या-द्वेष से विरत नहीं है वह नरक ही भोग रहा है और नरक को भोगनेवाला स्वर्ग की परिकल्पना तो कर सकता है पर स्वर्ग का अनन्त सुख नहीं उठा सकता । वह उस सुख को भोगनेवाले से सुख छीनने की कोशिश तो कर सकता है, कुछ दिन के लिए उसे उससे छीनकर स्वर्ग सुख भोग भी ले परन्तु अन्ततः उसे अपने कुकर्मों का फल मिलकर ही रहता है । पौराणिक सभी राक्षसों का एक सा हाल हुआ पहले स्वर्ग सुख की लालसा, फिर देवों से छीनकर उस स्वर्ग सुख को भोगना फिर त्रिदेवों के द्वारा मारा जाना यानि अन्ततः क्या हाथ लगा नरक और क्या तो अनन्त भगवान का अनन्त सुख वही उठा सकता है जिसने उनसे अनन्त प्रेम किया है तो स्वर्ग की सीढी पर जिसे भी कदम रखना है उसे पहले अपने मन के वातावरण को सुन्दर गुणों की सुगन्ध से युक्त करना होगा । ध्रुव ने वही किया, प्रह्लाद ने वही किया, उपमन्यु ने वही किया और स्वर्ग से भी उत्तम सुख भगवान की गोद का सुख उनलोगों ने उठाया । हमें भी अगर स्वर्गिक सुख पाना है तो हमें अपने अन्दर सुन्दर गुणों की खेती करनी होगी, अपने तन, मन और आचरण से सुन्दर बनना होगा । सुन्दर विचारों से सुन्दर कार्य सम्पन्न होंगे तो सुन्दर कार्य करनेवालों से इस जगत् में ही वह अद्भुत स्वर्गीय वातावरण उत्पन्न होगा जिसकी परिकल्पना परमपूज्य गुरुदेव के द्वारा सतयुग की वापसी और प्रज्ञायुग के रूप में की गई है तो स्वर्ग सीढी पर कदम रखने के लिए बदलना हमें है, सुधरना हमें है । हमारे अन्दर का यही बदलाव, यही सुधार हमारे अन्दर और इस धरती पर स्वर्ग की वातावरण उपस्थित करने में सक्षम है ।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **जब भी किसी नए उपकरण का आविष्कार हुआ है उसने मानव श्रम को आसान बनाया। पहियों ने हमारे पैरों की थकान हरी, भाप के इंजनों ने बाहुबल की निर्भरता को अप्रासंगिक किया और कंप्यूटर ने जटिल गणनाओं को पलक झपकते ही संभव बना दिया। पर इन तमाम युगांतकारी परिवर्तनों के बीच मनुष्य का मस्तिष्क अक्षुण्ण और सुरक्षित था।**
- **सोचना, मौलिक जिज्ञासा करना, संदेह प्रकट करना और वैचारिक अंतर विरोधों से जूझना केवल और केवल मनुष्य का विशेष अधिकार रहा। पर आज हम एक ऐसे मोड़ पर आ खड़े हुए हैं, जहां तकनीक हमारे अंदर स्थित सर्वोच्च विशेषाधिकार यानि सोचने की क्षमता को चुनौती दे रहा है।**
- **आज चैट जीपीटी, जेमिनी, क्लाउड और डीपसीक जैसे ए आई प्लेटफॉर्म केवल पारंपरिक सर्च इंजन की तरह सूचनाएं एकत्र नहीं कर रहे, बल्कि वे मानव मस्तिष्क की नकल करते हुए निबंध लिख रहे हैं, शोध पत्र तैयार कर रहे हैं, कविताएं लिख रहे हैं और सॉफ्टवेयर के कोड लिख रहे हैं। बौद्धिक जगत में इसका असर साफ दिखने लगा है।**
- **आज शोध का पहला चरण प्रॉम्प्ट लिखना हो गया है और अंतिम चरण कॉपी पेस्ट करना। इस कारण बौद्धिक परिपक्वता का दायरा बिल्कुल सिकुड़ता जा रहा है।**
- **2025 में 17 से 25 वर्ष के 666 युवाओं पर किए गए व्यापक अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि ए आई पर निर्भरता के कारण युवाओं के क्रिटिकल थिंकिंग स्कोर में उल्लेखनीय गिरावट आई है। इस डिजिटल शॉर्टकट ने साहित्यिक चोरी यानि प्लेगरिज्म को भी एक नया परिष्कृत और अदृश्य चेहरा दे दिया है। आज इंटरनेट पर मौजूद अरबों स्रोतों से सामग्री उठाते हैं और उसे इस तरह से पुनर्गठित करते हैं कि मौजूदा प्लेगरिज्म डिटेक्शन सॉफ्टवेयर भी एक बार चकमा खा जाता है।**
- **मतलब हम एक ऐसी बौद्धिक पीढ़ी का निर्माण कर रहे हैं जो तात्कालिक उत्तर देने में तो माहिर है लेकिन उसमें नए प्रश्नों को जन्म देने की क्षमता समाप्त हो रही है।**
- **इससे भी बड़ा संकट यह है कि जब ए आई को किसी प्रश्न का सही उत्तर नहीं पता होता तो वह अपनी प्रोग्रामिंग के आधार पर मनगढ़ंत तथ्य और आंकड़े तैयार कर देता है।**
- **इतिहास में पहली बार ऐसा दौर आया है जब गलत और भ्रामक सूचनाएं इतनी सुगठित, व्याकरण सम्मत और आश्वस्त करने वाली भाषा में प्रस्तुत की जा रही है कि वह सच से भी ज्यादा सच दिखने लगी हैं। यह केवल तकनीकी खामी नहीं है, लोकतंत्र, चिकित्सा, पत्रकारिता और न्यायपालिका जैसे स्तंभों के लिए गंभीर अस्तित्व परक संकट है । हमें इस भ्रम से बाहर निकलना होगा कि एल्गोरिज्म पूरी तरह से निष्पक्ष और तटस्थ होते हैं। मशीन अंततः वही सिखाती है जो मनुष्य उन्हें सिखाता है।**
- **यहां सबसे बड़ा प्रश्न नैतिक जवाबदेही का है यदि किसी ए आई जनित गलत चिकित्सा सलाह से किसी मरीज की जान चली जाए या मशीन की त्रुटि के कारण अदालत में कोई निर्दोष दोषी सिद्ध हो जाए, तो कटघरे में किसे खड़ा किया जाएगा? इस आभासी दुनिया का एक और स्याह पहलू है इंटरनेशनल एलर्जी**

एजेंसी के आंकड़ों के अनुसार 2024 में ही दुनिया भर के डाटा सेंटरों ने वैश्विक बिजली का डेड प्रतिशत यानि 415 टेरा वाट आवर हिस्सा डकार लिया।

- आने वाले इस वैश्विक संकट को देखते हुए दुनिया के अग्रणी देश ने संभलना शुरू कर दिया है। चीन ने अपनी प्राथमिक कक्षाओं में जेनरेटिव ए आई के स्वतंत्र उपयोग पर कड़ा अंकुश लगाया है। वहीं अमेरिका ने प्रतिबंध के बजाय ए आई साक्षरता का मार्ग चुना है। भारत में भी यूजीसी ने ए आई के अनाधिकृत उपयोग को अकादमी कदाचार की श्रेणी में शामिल किया है।
- हालांकि भारत के संदर्भ में एक व्यवहारिक उलझन यह भी आ रही है कि कई बार ए आई डिटेक्टर सॉफ्टवेयर छात्रों के मौलिक लेखन को भी मशीन जनित घोषित कर देते हैं । इसलिए भारत को केवल सॉफ्टवेयर पर निर्भर रहने के बजाय वाईवा, विशेषज्ञ समीक्षा और पारदर्शी प्रकटीकरण की नीतियों को समान महत्व देना होगा।
- अनुभा सिंह कहती हैं कि ए आई हमारी भाषा सुधार सकता है, शुरुआती मसौदा तैयार कर सकता है और विशाल डाटा को व्यवस्थित कर सकता है, पर संवेदनशीलता, अनुभव, नैतिक विवेक ,अंतरात्मा की आवाज और मौलिक चिंतन आज भी केवल मनुष्य की ही थाती है। हमें ए आई के साथ सोचना सीखना होगा ना कि ए आई के द्वारा सोचा जाना स्वीकार करना होगा।
- आज शोध का पहला चरण प्रॉम्प्ट लिखना हो गया है और अंतिम चरण कॉपी पेस्ट करना। इस कारण बौद्धिक परिपक्कता का दायरा बिल्कुल सिकुड़ता जा रहा है।
- 2025 में 17 से 25 वर्ष के 666 युवाओं पर किए गए व्यापक अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि ए आई पर निर्भरता के कारण युवाओं के क्रिटिकल थिंकिंग स्कोर में उल्लेखनीय गिरावट आई है। इस डिजिटल शॉर्टकट ने साहित्यिक चोरी यानि प्लेगरिज्म को भी एक नया परिष्कृत और अदृश्य चेहरा दे दिया है। आज इंटरनेट पर मौजूद अरबों स्रोतों से सामग्री उठाते हैं और उसे इस तरह से पुनर्गठित करते हैं कि मौजूदा प्लेगरिज्म डिटेक्शन सॉफ्टवेयर भी एक बार चकमा खा जाता है।
- मतलब हम एक ऐसी बौद्धिक पीढ़ी का निर्माण कर रहे हैं जो तात्कालिक उत्तर देने में तो माहिर है लेकिन उसमें नए प्रश्नों को जन्म देने की क्षमता समाप्त हो रही है।
- इससे भी बड़ा संकट यह है कि जब ए आई को किसी प्रश्न का सही उत्तर नहीं पता होता तो वह अपनी प्रोग्रामिंग के आधार पर मनगढ़ंत तथ्य और आंकड़े तैयार कर देता है।
- स्मार्टफोन और ए आई ने याद रखना और सोचने का तरीका जरूर आसान कर दिया है, लेकिन इससे हमारे वैचारिक क्षमता व याददाश्त कमजोर पड़ने लगी है।
- तकनीक हमें ज्ञानी होने का झूठा एहसास दिलाते हैं जबकि दिमाग को सक्रिय रखने और अपनी समझ में वृद्धि के लिए इंसान याद बढ़ाने का अभ्यास करता रहा है। इसके लिए रटकर सीखना, दोहराना, तुकांत जैसी विधियां परिचालन में आए। फिर नोटबुक गणना के लिए कैलकुलेटर और नेविगेशन के लिए मानचित्रों का प्रयोग शुरू हुआ । भाषायी बाधाओं को दूर करने के लिए ट्रांसलेशन टूल्स उपलब्ध हैं। हमारा कॉग्निशन यानि हमारे सोचने की योग्यता के तहत मस्तिष्क तीन मूल कार्य करता है- जानकारी को एन कोड करना यानि ग्रहण करना ताकि दिमाग से समझ सके, जानकारी को स्टोर करना और जानकारी को वापस उपलब्ध करना। रिसर्च से पता चलता है कि जब हमारा ध्यान तनाव में होता है तो हमारा दिमाग जानकारी को इनकोड करने पर अधिक ध्यान देता है और स्टोरेज और रिट्रीवल यानि जानकारी को स्टोर करने और वापस करने को नजर अंदाज कर देता है क्योंकि ये अधिक मेहनत वाले काम हैं।

- सबसे चिंताजनक बात यह है कि जब हम ए आई के आउटपुट को जाँचे-परखे बिना स्वीकार कर लेते हैं तो वह एक तरह से कॉग्निटिव सरेंडर होता है जो आज के युवाओं में देखा जा रहा है। अगर यह आदत विकसित हो जाए तो आगे चलकर यह मानसिक सेहत को मुसीबत में डाल सकते हैं । मन में आने वाले हर सवाल को चैट जी पी टी से पूछने की आदत क्रिटिकल थिंकिंग की क्षमता पर असर डाल सकती है।
- जानकारी को बिना सोचे- समझे मानने की जगह इसकी अनेक सोर्स से तुलना करनी चाहिए। इससे सही समझ बनती है यानि टेक्नोलॉजी की सीमाओं को समझने से सही फैसले लेने की आदत बनती है।
- टेक्नोलॉजी का समझदारी भरा प्रयोग करने से दिमाग एक्टिव रहता है।
- ऑफलाइन रहने की आदत डालनी चाहिए जिससे किसी स्थान पर टेक्नोलॉजी नहीं होने पर परेशानी ना हो। डिजिटल डिवाइस के बिना कुछ समय बिताने से एकाग्रता, चिंतन और स्वतंत्र सोच को बढ़ावा मिलता है। पढ़ने, पहेलियां सुलझाने,भाषा सीखने और म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट बजाने से दिमागी लचीलापन बढ़ता है।
- डॉ राजेश कुमार भी कहते हैं कि गैजेट्स के प्रयोग में संतुलन जरूरी है। कॉग्निटिव ऑफ लोडिंग के मामले में भी हमें ऐसा ही करने की जरूरत है। आज मल्टी टास्किंग अधिक हो गई है, आज लोगों को एक ही समय में बहुत सारे काम करने होते हैं, इसलिए जरूरी है कि इसे कम किया जाए और एक समय में एक ही काम किया जाए तो ज्यादा बेहतर ढंग से हो पाएगा ।
- हर चीज की एक सीमा होती है । एक साथ सब कुछ याद रखना संभव नहीं है।
- आप गैजेट्स को पूरा नजर अंदर तो नहीं कर सकते लेकिन कोशिश कर सकते हैं कि इनका प्रयोग कम करें और जरूरत की चीजों के लिए ही करें तो ज्यादा बेहतर होगा।
- यूरोप के कई देश जर्मनी, स्पेन, बेल्जियम माता-पिता की सहमति से ही सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर रहे हैं। फ्रांस, डेनमार्क, इंडोनेशिया, मलेशिया और ऑस्ट्रेलिया ने टीनएजर यानि किशोरों के लिए कानून बनाकर मोबाइल और डिजिटल डाटा का प्रयोग वर्जित कर दिया है।
- इंग्लैंड के प्रधानमंत्री ने 16 वर्ष तक के किशोरों के लिए सोशल मीडिया को प्रतिबंधित कर दिया। उन्होंने कहा कि ये बच्चे नाखुश भी हैं और असुरक्षित भी हैं। यह एक प्रकार का जाल है जिसमें बच्चे फंस गए हैं। हालांकि उन्होंने भी यह घोषणा सोशल मीडिया के ऊपर ही की है। सचमुच इसका अत्यधिक उपयोग ब्रेन रॉट यानि दिमाग का सड़ जाना जैसी घातक स्थिति को जन्म दे रहा है।
- आज का इंसान प्रत्यक्ष लाभ देखता है, परोक्ष हानि को नहीं देखता है। ज्ञान की दृष्टि, विवेक की दृष्टि हमें सच को दिखा देती है।
- ए आई डाटा प्रोसेसिंग यूनिट है। ए आई ब्रेन का सब्सीट्यूट हो सकता है पर हृदय का नहीं । ब्रेन का जो कॉग्निटिव सिस्टम है ए आई उसका सब्सीट्यूट हो सकता है, लेकिन हृदय का सब्सीट्यूट नहीं हो सकता।
- सारे अनुभव हृदय में होते हैं, भावनाओं में होते हैं। ए आई आपकी भावनाओं को जनरेट नहीं कर सकता।
- ब्रेन भी डाटा प्रोसेसिंग यूनिट है । जन्म से लेकर अभी तक आपने जो सोचा-विचारा, जो आपको अनुभव हुआ वह सारा ब्रेन में है। ब्रेन उसकी प्रतिक्रिया करके जवाब देता है । ए आई आपके ब्रेन प्रोसेसिंग यूनिट की तरह जो डाटा मनुष्य ने फीड किया है उस डाटा को प्रोसेस करके जवाब देता है।
- देव विद्या और असुर विद्या हमेशा परमात्मा को केंद्र में रखकर काम नहीं करते। देवता भी अभिमान से करते हैं, असुर भी अपने अभिमान से करते हैं। ऋषि हमेशा परमात्मा को केंद्र में रखकर काम करते हैं।

इसलिए उनके कार्य में हमेशा सृजनशीलता और विविध प्रकार के परमेश्वर के प्रकाश को और परमेश्वर की चेतना को अभिव्यक्त करने की कोशिश होती है।

- ए आई किस बात का द्योतक है? इंसान की चेतना ज्यादा बुद्धिवाली हो गई है,लेकिन ज्यादा प्रकाशित नहीं हुई है। इंसान में जो क्षमता अभी जागृत हो रही है या विकसित हो रही है वह उसकी प्रतिभा है। उसकी प्रज्ञा नहीं है, मतलब विवेक नहीं है। ए आई में विवेक नहीं है, उसमें चतुराई है, क्योंकि उसमें वही फीड किया गया है। विवेक फीड नहीं किया जा सकता, क्योंकि उसमें इमोशन डाला नहीं जा सकता। जोड़-तोड़कर वह कोई भी इनफॉरमेशन परोस देता है, यही उसकी चालाकी है। इसलिए ए आई के साथ सोचें, सीखें पर ए आई के द्वारा सोचा जाना हम स्वीकार नहीं करें, इस बात के लिए हम सभी लोग अलर्ट रहें, जागरूक रहें और अपनी बुद्धि एवं विवेक का भी प्रयोग करें।
- कुछ लोगों को पढ़ाई के पाठ्यक्रम निरर्थक लगते हैं। शेरशाह ने हुमायूं को हरा दिया, कुछ दिन गद्दी पर बैठा फिर उसकी मृत्यु हो गई, फिर हुमायूं राज किया, फिर अकबर राज किया।
- कुछ लोगों का कहना है कि इससे हमारा क्या लेना - देना कि अकबर राज किया या नहीं किया पर लेना-देना है । वह मिट्टी, वह देश जिसकी हवा में हम सांस लेते हैं, वह धरती जिसकी धूल से हमारा शरीर बना है, उस हवा, उस मिट्टी, उस पानी से, उस वातावरण से बहुत कुछ लेना-देना है।
- इतिहास हमारे जीवन की यात्रा है। अगर हम गीता को मानते हैं तो जो जन्मता है उसकी मृत्यु निश्चित है और जो मरा है उसका जन्म भी निश्चित है। तो कहीं ना कहीं हम उसके साक्षी रहे होंगे।
- जब हम विषय को अपने जीवन से जोड़कर देखेंगे तो वह निरर्थक नहीं अर्थपूर्ण लगने लगेगा । तब हमारी पढ़ाई में रुचि जागने लगेगी, हमें उसको जानने-समझने की चाहत उत्पन्न होगी।
- इतिहास को पढ़ने का मतलब है वह धरती, वह देश, उसका गौरव, उसके सुख, उसके दुख, भारत माता कब सुखी रही और कब दुखी रही, कब उसकी संतानें पीड़ित रहीं और कब उसकी संतानें समृद्ध रहीं, यह पता चलता है।
- केवल इतिहास की ही बात नहीं है, हमारा भूगोल क्या है? हमारी अपनी जमीन, हमारी अपनी दुनिया, कहां पर्वत है, कहां पहाड़ है, कहां पत्थर है, कहां जंगल है, कहां रेगिस्तान है, भूगोल को जानने से हमें पता चलता है, अच्छा हमारी धरती ऐसी है, हम उसमें रहते हैं । वहां की हवाएं हमें छूती हैं। भूगोल की हमारे जीवन में क्या उपयोगिता है इस तरह से सोचने पर पता चलता है।
- कहने का तात्पर्य यह है कि एक-एक विषय हमारे जीवन से गुंथा हुआ है। उसको हम समझने की कोशिश करें तो पता चलता है कि पाठ्यक्रम के सारे विषय वस्तु किस तरह हमारे जीवन से जुड़े हैं। उन विषयों को समझने के चक्कर में आप अपने को समझने लगेंगे। जब जीवन समझ में आने लगेगा, तो पढ़ाई में आनंद आने लगेगा। देश के प्रति, राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति हमारी क्या जिम्मेदारी है यह भी समझ में आने लगेगा और उसके प्रति हमारी क्या जिम्मेदारी है यह भी समझ में आने लगेगा। उसके प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है, हमारा क्या दायित्व है, यह भी भली-भांति समझ में आने लगेगा।
- आपको विषय के साथ तादात्म्य बिठाना पड़ेगा, तब विषय आपको रुचिकर लगेगा, उसकी उपयोगिता समझनी पड़ेगी, तब उसका मूल्य पता चलेगा।
- जहां तक डॉक्टर की बात है तो डॉक्टर स्वास्थ्य नहीं लाता, वह बीमारी भगाता है । मनुष्य तो स्वाभाविक रूप से स्वस्थ रहता है, प्राकृतिक रूप से मनुष्य सहज स्वस्थ है।

- जब विकृति होती है, जैसे बुखार हो गया तो बुखार भगाता है स्वास्थ्य नहीं लाता है। बुखार भाग गया तो हम स्वस्थ महसूस करते हैं।
- जब आदमी स्वस्थ जीवन जीता है तब वह स्वस्थ कहलाता है फिर उसके अंदर बोझ नहीं होता, वह हल्का होता है । जब हमारे शरीर में विष का बोझ बढ़ जाता है तो हम बीमार हो जाते हैं। अगर हमारा भाव, हमारा विचार स्वच्छ है तो हम बीमार नहीं होते, हम स्वस्थ रहेंगे।
- हमारा जीवन तमोगुणी या रजोगुणी या सतोगुणी होता है। इस आधार पर हम अपने जीवन में सोचते, विचारते और व्यवहार करते हैं, अपने शरीर के साथ भी और अन्य लोगों के साथ भी।
- रजोगुण कब आता है, उसका मूल क्या है? रजोगुण का मूल है लालसा। सतोगुण का मूल है अनिवार्यता और तमोगुण का मूल है जड़ता।
- "साधक पंचक" में शंकराचार्य लिखते हैं कि व्यक्ति को भोजन औषधि के रूप में लेना चाहिए। क्षुधा रूपी व्याधि की प्रतिदिन चिकित्सा करनी चाहिए। मतलब भोजन एक औषधि है और औषधि में तीन चीजें होती है- एक अनुपात होता है, दूसरा उसकी मात्रा होती है, तीसरा समय होता है। दिन में खाना है, रात में खाना है, तीन बार खाना है, पांच बार खाना है, मात्रा कम या ज्यादा नहीं ले सकते। जिस औषधि का जो अनुपात होता है उसी अनुसार लिया जाता है और कब लेना चाहिए भोजन में भी अनुपात है, कितना जल लेना चाहिए, भोजन के कितनी देर बाद लेना चाहिए। किस भोजन के बाद दूध लेना चाहिए या नहीं, यह स्पष्ट पता होना चाहिए।

जिज्ञासा

प्रश्न- मेरा मन पढ़ने में एकाग्र नहीं हो पाता है, टारगेट बनाती हूँ, रोज़ सोचती हूँ पर उसे पूरा नहीं कर पाती हूँ। क्या करें?

उत्तर- मन तो चंचल होता ही है, मन को लगाना पड़ता है। मन भटके नहीं, इसके लिए तामसी और राजसी भोजन का त्याग करें, सात्विक भोजन करें। दिनचर्या सही करें। पहले छोटा-छोटा टारगेट रखें, उसको आप आसानी से पूरा कर पाएंगी। फिर बड़ा टारगेट रखें और उसके लिए प्रयास करें, सफलता जरूर मिलेंगी। पहले बड़ा टारगेट रखेंगे तो शायद पूरा न हो तो मन में निराशा-हताशा आएगी, इसलिए छोटे-छोटे टारगेट से शुरू करें। पढ़ाई आसान हो जाएगी। पढ़ने में मन न लगना, कुछ ऐसा है जैसे दाल-रोटी। दाल-रोटी खाने का मन नहीं करता, दाल-रोटी खाने के लिए कड़ी भूख चाहिए, चाट खाना हो पानी - पूड़ी खाना हो,पकौड़े खाना हो, आलू टिक्की खाना हो, उसको देखते ही भूख लग जाती है फिर हम बड़े मज़े से खा लेते हैं। क्योंकि उनके प्रति एक आकर्षण है। हमेशा देखें जो स्वास्थ्यकर है और पुष्टिकर है, जो हमें स्वस्थ करेगा, हमारे जीवन को पोषित करेगा, उसमें हमारी रुचि नहीं होती है। जो हमें बीमार करेगा, उसको खाने में बड़ा मन लगता है। यही तो मन की वृत्ति है, प्रवृत्ति है, इसी पर तो हमें काम करना है। मन को मनमानी करने से रोकिए, इसके लिए ही तो प्रार्थना,ध्यान और प्राणायाम है। भगवान गीता में भी कहते हैं- जो शुरुआत में हमें विष की तरह लगती है लेकिन परिणाम में अमृत की तरह होती है। इस तरह से सोचेंगे, तो धीरे-धीरे मन शांत भी होगा, एकाग्र भी होगा और स्थिर भी होगा । फिर प्रतिभा के नए आयाम भी आपके अंदर से विकसित होंगे। परीक्षा की तैयारी में छात्र छात्राएं 10 घंटा, 12 घंटा लगा देते हैं, उसी समय वे देखते हैं कि आसपास के लोग घूमते- फिरते हैं, इसे देखकर पढ़ना अच्छा नहीं लगता, पर जीवन में सफल होना हमारी पहली प्राथमिकता होगी, तो हम फिर से मन को एकत्रित कर पढ़ाई में पूरे ज़ोर-शोर से लग जाएंगे। इस बात को अपने अन्तर्मन में पूरी तरह समझना होगा, सिर्फ सुनना नहीं होगा, समझना होगा। ये जो विद्यार्थी जीवन है, ये जिंदगी की नींव है। अगर ये मजबूत हो गई, पुख्ता हो गई, इसमें मेहनत करके अपने देह को मजबूत कर लिया गया, अपने मन को मजबूत कर लिया गया, जो खाने योग्य है वह खाया गया, जो सुनने योग्य है वह सुना गया, जो पढ़ने योग्य है वह पढ़ा गया, तो फिर यह मान कर

चलें कि बाकी के 50 साल स्वस्थ, समुन्नत और प्रगतिशील होंगे। लगभग 20 से 25 साल हम खपे हैं, देह को मजबूत करने के लिए सात्विक और पुष्टिकर खाना खाया है, शारीरिक श्रम किया है, स्वाध्याय और कक्षा के विषय-वस्तु अध्ययन में अपना मन लगाया है, तो यह मान कर चलें कि अगले 50 साल हमारे शानदार, सम्मानित और क्रियाशीलता में बीतेंगे। प्रतिभा का विकास करने वाले, सफलता, सिद्धि और संतोष दिलाने वाले होंगे। लेकिन जब ये बातें समझ में आ जाएंगी, देखिए सुनना एक अलग बात है और समझना सर्वथा अलग बात है, तब बात बनेगी। कुछ लोगों की पढ़ाई में रुचि नहीं है, रट रहे हैं, ज़ोर-जुगाड़ लगा करके नंबर ले आते हैं। पर समझना किसे कहते हैं, रुचि क्या होती है? जब वो चीजें जीवन उपयोगी होती हैं । हमारे जीवन में पढ़ाई की क्या उपयोगिता है इसको हमें भलीभाँति समझना होगा तब बात बनेगी। जब विषय हमें काम की लगने लगे, चाहे वो फिजिक्स हो, केमिस्ट्री हो, मैथ्स हो, बायोलोजी हो, वो निरर्थक नहीं अर्थपूर्ण लगने लगे, तब रुचि जगेगी। तब उसे जानने-समझने की चाहत होगी। तो फिर हम रटा हुआ

नहीं लिखेंगे, समझा हुआ लिखेंगे। जब हम समझा हुआ लिखेंगे तब हम दूसरों को भी समझा पाएंगे। जिसे अपने विषय में रुचि है, वह दूसरों में भी रुचि जगा सकता है।

पढ़ने में मन नहीं लगना, यह प्रश्न रुचि का है, समझ का है, हम जो विषय पढ़ते हैं उस विषय का महत्त्व हमें पता होना चाहिए। जब महत्त्व पता चल जाता है तो फिर मन करता है बार-बार पढ़ते रहें। तो रुचि जगनी चाहिए और समझ में बात आनी चाहिए भली-भांति। भगवत गीता का यह वाक्य हमें अपनी पढ़ाई के टेबल के पास लिख देना चाहिए बड़े अक्षरों में- ये जो शुरुआत में विष की तरह लगती है, परिणाम में अमृत की तरह होता है।

सभी जानते हैं प्रातःकाल स्वर्णिम काल है, इस समय जगने से स्मृति, धृति, मेधा और प्रज्ञा का जागरण होता है। लेकिन क्या कारण है कि हम जग नहीं पाते, दो दिन जगे भी, फिर कुत्ते की पूंछ टेढ़ी की टेढ़ी। दरअसल हम अपनी आदतों से लाचार होते हैं, वृत्ति-प्रवृत्ति से लाचार होते हैं। कहाँ गड़बड़ी हो गई? हमारे अंदर वो धृति यानि इच्छा शक्ति नहीं है, धारणा शक्ति नहीं है जो हमें सुबह उठा ही दे, हमें 10 घंटे पढ़ने के लिए बाध्य कर दे। जब इच्छा के साथ धृति जुड़ती है, धृति का अर्थ धैर्य भी होता है, धीरज भी होता है, दृढ़ संकल्प भी होता है, साहस भी होता है, और स्थिरता भी होती है, धारण करना होता है और धारणा शक्ति भी होती है। सच यह है कि हमारी इच्छा में कोई बल नहीं है, हमारी चाहत में भी कोई बल नहीं है, हमारे विचार में भी कोई बल नहीं है, हमारे विवेक में भी कोई बल नहीं है, जब तक उसके साथ धृति नहीं जुड़ती है, शक्ति नहीं जुड़ती है। इच्छा शक्ति, विचार शक्ति, विवेक बल कब बनता है? जब उससे प्राण जुड़ जाते हैं तब वह इच्छा-इच्छाशक्ति, विचार- विचार शक्ति, विवेक- विवेक शक्ति बन जाता है। पर वह धृति सात्विक होनी चाहिए। मन, प्राण और इंद्रियों की क्रिया जिनसे नियंत्रित होती है वह है धृति। धृति की जड़ों को मजबूत करता है प्राण की ऊर्जा। प्राण शुद्ध होगा तो धृति सात्विक हो जाएगी, इसलिए प्रार्थना, प्राणायाम और ध्यान करिए। रत्नाकर को नारद मुनि ने कहा कि जो तुम ये चोरी- डकैती करते हो, क्यों करते हो? घर के लोगों के लालन-पालन के लिए, रत्नाकर ने जवाब दिया। तो नारद मुनि ने कहा- उनसे पूछो, क्या वो तुम्हारे इस गलत कर्म के भागीदार होंगे? तो परिवार के सभी सदस्यों ने कहा- नहीं, ये तुम्हारा काम है, हमें खिलाना-पिलाना, हम तुम्हारे गलत कर्म में क्यों भागीदार होंगे। रत्नाकर को यह बात भली-भांति समझ में आ गई और जब नारद मुनि ने कहा कि राम-राम जपो तो शायद इस पाप कर्म से मुक्त हो जाओ। लेकिन वह राम नहीं बोल पाता था नकारात्मक ऊर्जा के कारण, मरा-मरा जपते हुए महर्षि वाल्मीकि बन गया। वाल्मीकि का अर्थ समझते हैं? जप करने में इतना तल्लीन हो गए, उन पर दीमकों ने अपना घर बना लिया, दीमक के धू. दीमक के घर को, वल्मीकि कहते हैं, उसमें सांप भी घुस जाता है सांप भी रहने लगता है इसलिए उसे बामी भी कहते हैं। जंगल में तीन चार फीट का टीला बन जाता है। वैसे बामी सांप के बिल को कहते हैं। बात जब पूरी तरह समझ में आ जाती है, इच्छाओं में जब प्राण जुड़ता है, धारणा जब बन जाती है, तब इस तरह की घटना घटती है। हर इच्छा धारणा नहीं बनती है, हर विचार धारणा नहीं बन जाती है, हर कल्पना धारणा नहीं बन सकती है, आप सोच लिए कि हम टारगेट बनाते हैं पर उसे पूरा करने के लिए धृति चाहिए, धारणा शक्ति चाहिए। धृति बिना प्राण शक्ति के नहीं होती है, प्राण ही तो उसके जड़ों को सींचता है। तो प्रातःकाल उठिये और धृति पैदा कीजिए, प्रार्थना, ध्यान, प्राणायाम करके।

प्रश्न- क्या आप बता सकते हैं कि ऐसा क्या करें कि पढ़ाई में मन लगने लगे?

उत्तर- रुचि पैदा कीजिए, समझ पैदा कीजिए, उनकी उपयोगिता पैदा कीजिए। फिर देखें पढ़ाई में कैसे मन लगने लगेगा। प्रार्थना प्राणायाम,ध्यान करिए, अपनी इच्छा में प्राण को जोड़िए, यानि धृति को जोड़िए तो इच्छा-इच्छा शक्ति बन जाएगी फिर आप पढ़ना चाहेंगे,तो पढ़ाई होगी । पढ़ाई उतनी दुरुह नहीं है, दरअसल पाठ्यक्रम जो है न वो हमें निरर्थक लगता है, इसलिए पढ़ाई बोझ लगती है। फिर हमें मन नहीं लगता है। विषय के साथ आपको तादात्म्य बिठाना पड़ेगा, विषय की उपयोगिता समझनी पड़ेगी,कि हमारे जीवन से जुड़ी हुई बातें हैं।

प्रश्न- लोगों का यह मानना है कि थर्सडे या सैटरडे को, बाल या नाखून काटना अशुभ होता है। क्या यह धारणा सही है?

उत्तर- ये प्राचीन मान्यताएँ हैं, कुछ लोग बृहस्पतिवार को ही सिर्फ मानते हैं कि नहीं कटाना चाहिए, कुछ लोग मंगलवार,बृहस्पतिवार, शनिवार तीनों को मानते हैं, कुछ लोग सिर्फ बृहस्पतिवार और शनिवार को ही मानते हैं। नाखून और बाल शरीर में स्थित प्राण के मैल हैं। यानि नाखून हड्डियों का मैल है, और बाल त्वचा का मैल है। प्राण के शुद्ध होने से हड्डी भी मजबूत रहता है और त्वचा भी चमकती रहती है। मूल प्राण ही है। मान्यता है तो उसके कुछ कारण भी होंगे, तात्कालिक प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन कहते हैं कि गलत समय कुछ काम करने पर तो स्वास्थ्य और आयु पर प्रभाव पड़ता है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि प्रतिदिन अगर आप दाढ़ी बनाते हैं फिर कोई दिक्कत नहीं है, अगर प्रतिदिन नहीं बनाते हैं तो मंगल, बृहस्पति, शनिवार को छोड़ दीजिए। अपनी-अपनी मान्यता है, अपनी-अपनी धारणा है। आपको जो सही लगे वो करिए। लोक मान्यता में यह कहा जाता है, यद्यपि शुद्धम लोक विरुद्धम न करणीयम् न करणीयम्, यद्यपि शुद्ध है कोई परेशानी नहीं है, लेकिन लोक विरुद्ध है, लोक मान्यता साथ नहीं देती उसका, तो मत करिए, मत करिए। विवाद खड़ा करने से कोई फायदा नहीं है।

प्रश्न- आपने पिछली कक्षा में गीता के एक श्लोक को बताया, ईश्वरा सर्व भूतानाम् हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति। मेरा प्रश्न है जब ईश्वर हमारे अंदर है, हमारे हृदय में निवास करते हैं और हम गान-ज्ञान-ध्यान के माध्यम से ईश्वर को जान सकते हैं, पहचान सकते हैं, तो फिर पूजा- पाठ का क्या महत्त्व है?

उत्तर- गान-ज्ञान-ध्यान भी पूजा- पाठ का ही तो एक अंग है न। पूजा- पाठ का जो महत्त्व है उसको इस तरह से समझने की कोशिश करें- हमारा मन बाहर इतना बिखरा हुआ है कि हम अपने हृदय में न तो झांक कर देख पाते हैं, न देख सकते हैं और न देखने की कोशिश करते हैं। तो पहली चीज़ है मन का स्थिर होना, मन का शांत होना, मन की समझदारी विकसित होना तो जैसे हम पूजा करते हैं पंचोपचार या षोडशोपचार, तो अपने मन को एक जगह लाते हैं, टिकाते हैं। पूजा के बाद होता है पाठ, किसी अच्छे सूक्त का, श्लोक का, ग्रंथ का पाठ करते हैं, जो स्वाध्याय जैसा भी है और मंत्र जैसा भी है। प्रतिदिन पाठ करने का मतलब एक मन्त्र पर बार-बार चिंतन करते हैं। चाहे भगवत गीता का पाठ करें, चाहे रामचरितमानस का पाठ करें, जीवन के सत्य और तत्व को समझने की कोशिश करते हैं। पूजा के बाद पाठ आता है, क्रमिक रूप से मन को साधने और स्थिर करने की दिशा है। पाठ के बाद जप आता है। अभी पाठ हमारा था, गीता के 700 श्लोक पढ़ेंगे, रामचरितमानस का सुंदरकांड पढ़ेंगे, दुर्गा सप्तशति पढ़ेंगे। पाठ में आधा घंटा एक घंटा जो भी लगे। उससे कम समय ही जप करते हैं, पर जप में बार-बार उस मंत्र का चिंतन करते हैं। ईश्वरा सर्वभूतानाम हृददेशे अर्जुन तृष्ठति, हमारा इस पर भरोसा हो, हमारा मन इस पर टिके, चीजों को समझे, फिर उसकी

सच्चाई जानने के लिए तत्पर हो। इसके लिए स्वाध्याय और मंत्र जप होता है। पूजा पहली कक्षा, पाठ दूसरी कक्षा, जप तीसरी कक्षा और उसके बाद आता है ध्यान। ध्यान में किसी अवलंबन की जरूरत नहीं है। हम बिल्कुल स्थिर हो गए। मान लें गायत्री मंत्र करते हैं तो सूर्य में स्थिर हो गए। स्थिरता जब गहरी होती है तो भगवत गीता में भगवान कहते हैं कि हृदय में स्थित हूँ, अब हृदय में तो भगवान भी हैं, हृदय के सबसे ऊपर की परत में हमारा चित्त भी है, जिसमें हमारा कर्म और संस्कार है। इतना आवरण हमें चंचल करता रहता है। धीरे-धीरे चित्त की वृत्तियों को शमन करने की जरूरत है। शमन हो जाते ही हमें यह बात समझ में आती है कि भगवान हृदय में हैं । पहले ये समझ में आता है, अनुभव में आता है कि हृदय प्रदेश में फिर अनुभव होता है सर्व भूतानाम् यानि हृदय प्रदेश में होता है आत्मज्ञान, तत्व ज्ञान होता है, जब ये महसूस हो जाता है सर्वभूतानाम् तब होता है हमें ब्रह्मज्ञान। भगवान गीता में फिर एक और बात कहते हैं कि जब यह अनुभूति होती है तो कैसा लगता है? वह सभी प्राणियों को मुझमें और मुझको सभी प्राणियों में देख लेता है। लेकिन देखने में बाधा दो - तीन चीजों की है-एक मन का चंचल होना, अस्थिर होना, दूसरा मन का बहिर्मुखी होना और तीसरा मन का नासमझ होना। हमें जो शिक्षण और संस्कार दिए गए हैं, वो कुछ और कहते हैं, इन सारी आध्यात्मिक बातों को फालतू और बेकार की बातें बतलाते हैं लेकिन जब समझ विकसित हो जाती है, तो फिर ये सारे आयोजन और प्रयोजन, पूजा के, पाठ के, जप के, ध्यान के इसलिए हैं कि उस अवरोध का शमन हो सके जो हमें इस अनुभूति से रोकते हैं। तो पहले पूजा करिए, फिर पाठ करिए, फिर जप करिए और फिर ध्यान करिए। या सभी एक साथ भी कर सकते हैं। फिर परमात्मा का अनुभव अपने हृदय में भी होगा, और सभी में परमात्मा और परमात्मा में सभी को देख पाएंगे, समझ पाएंगे, अनुभव कर पाएंगे।

जुलाई माह की गतिविधियाँ

दिनांक 5 जुलाई 2026 को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने 'स्मार्टफोन और एआई कितना सही?' विषय पर उपस्थित युवाओं से कहा—

अभी 5 से 10 जुलाई तक स्विट्ज़रलैंड के जेनेवा में संयुक्त राष्ट्र (यूनाइटेड नेशन्स) का एक सम्मेलन आयोजित हो रहा है, जिसमें अखिल विश्व गायत्री परिवार के डॉ. चिन्मय पांड्या भी भाग लेने जा रहे हैं। सम्मेलन का विषय "AI for Good" है। यह पूरी दुनिया के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है। जैसे हम हमेशा कहते हैं कि इंसान को अच्छाई के लिए जीना चाहिए, वैसे ही जेनेवा में आयोजित संयुक्त राष्ट्र के इस सम्मेलन में पूरी दुनिया के लोग इस बात पर विचार करेंगे कि एआई का उपयोग मानवता और समाज के कल्याण के लिए कैसे किया जाए।

उन्होंने कहा कि एआई में विवेक नहीं, बल्कि चतुराई है, क्योंकि उसमें वही जानकारी होती है जो उसे दी जाती है। उसमें विवेक या मानवीय संवेदनाएँ (इमोशंस) फीड नहीं की जा सकतीं। वह उपलब्ध सूचनाओं को जोड़-तोड़कर किसी भी प्रकार की जानकारी प्रस्तुत कर सकता है, यही उसकी कार्यप्रणाली है। इसलिए एआई के साथ सोचें, सीखें, लेकिन एआई के द्वारा सोचा जाना स्वीकार न करें। इस विषय में हम सभी को सदैव सतर्क और जागरूक रहना चाहिए।

इस अवसर पर भूतपूर्व आरएडब्ल्यू (RAW) अधिकारी राकेश कुमार, इंजीनियर रंजीत जी, प्रकाश ठाकुर, आलोक जी एवं समस्त गायत्री परिजन उपस्थित थे।

दिनांक 05 जुलाई 2026 को गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. अरुण कुमार जायसवाल।

मित्र गण और उनकी पत्नियाँ...

राकेश कुमार

रंजीत कुमार

प्रकाश ठाकुर

अशोक कुमार

आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में सहभागिता करते गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के छात्र-छात्राएँ एवं अन्य उपस्थितजन।

A

नहीं,
B

C

D

तिरस्कार
E

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी
एक संगोष्ठी

A

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में आयोजित ज्ञानवर्धक क्विज़ प्रतियोगिता में A से E तक की टीमों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। निर्णायक मंडल द्वारा निष्पक्ष मूल्यांकन के साथ प्रतियोगिता का सफल संचालन किया गया।

गायत्री शक्तिपीठ के कार्यक्रम के उपरांत डॉ. अरुण कुमार जायसवाल द्वारा नया बाजार स्थित अपने घर पर बचपन के मित्र गणों के साथ पचास साल की बातों को साझा करते हुए...

रात्रि भोजन...

भूखे की बेचैनी और खाने के बाद की तृप्ति एवं खिलाते हुए देखते रहने की खुशी हर रोज महसूस करता गायत्री परिवार, सहरसा

दैनिक शिवाभिषेक

प्रगेश्वर महादेव मन्दिर, गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

गायत्री माता

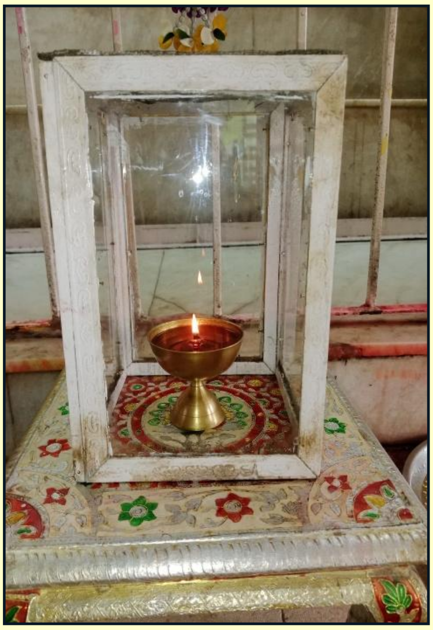

अखण्ड दीप

यज्ञ शाला-दैनिक यज्ञ एवं उपनयन संस्कार

चरण पीठ

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा — दिनांक 12-07-2026 व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा, "देश क्या है? भूभाग है, भूगोल है। राष्ट्र क्या है? उसकी चेतना है। देश को जीवंत करने के लिए चेतना की आवश्यकता होती है। किसी को जगाने के लिए जितना प्रयास करना पड़ता है, उसी प्रकार भारत के तमस, जड़ता और सुषुप्त अवस्था को दूर करने के लिए स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण परमहंस को लगभग 100 वर्ष का सतत प्रयास करना पड़ा। इसी क्रम में महर्षि अरविंद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार, गायत्री परिवार के सूत्र-संचालक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य तथा गीता प्रेस ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उस समय भारत का जीवन आलस्य और प्रमाद से भरा हुआ था। अर्थात हमारी राष्ट्रीय चेतना लुप्त नहीं हुई थी, बल्कि सुषुप्त अवस्था में थी। उसी चेतना के जागरण के लिए यह समस्त कार्य हुआ।"

इस अवसर पर होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. रूपम द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच एवं दवा वितरण किया गया। लगभग 50 से अधिक मरीजों ने इस चिकित्सा सेवा का लाभ उठाया। उन्होंने बताया कि प्रत्येक माह के द्वितीय एवं अंतिम रविवार को नियमित रूप से आम जनता के लिए निःशुल्क चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराई जाएगी।

साथ ही एक और महत्वपूर्ण सेवा कार्य का शुभारंभ हुआ। अखंड ज्योति आई हॉस्पिटल, मस्तिचक (छपरा) के सहयोग से गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में निःशुल्क नेत्र जाँच एवं मोतियाबिंद जाँच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में लगभग 500 से अधिक लोगों ने अपनी आँखों की जाँच कराई। आवश्यकता अनुसार चयनित मरीजों के मोतियाबिंद का ऑपरेशन भी निःशुल्क कराया जाएगा।

दिनांक 12 जुलाई 2026 को गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. अरुण कुमार जायसवाल।

आरएसएस के विभाग प्रचारक श्री सुमित जी, युवा संवाद में अपने बहुमूल्य सुझाव देते हुए...

मेजर प्रोफेसर डॉ गौतम युवाओं को संकल्प कराते हुए...

व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में ध्यान करते प्रतिभागी...

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में निःशुल्क होम्योपैथी चिकित्सा परामर्श देती एवं निशुल्क दवा देती डॉक्टर रूपम सिंह...

होम्योपैथी चिकित्सा हेतु मरीजों की कतार...

अखंड ज्योति आई हॉस्पिटल, मस्तीचक छपरा के सौजन्य से गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में आयोजित निशुल्क स्वास्थ शिविर में नेत्र परीक्षण...

चिकित्सा परामर्श के उपरांत निशुल्क दवा वितरण...

मरीजों की कतार...

प्रतिदिन जरूरतमंदों के बीच भोजन प्रसाद वितरण कर संतुष्टि का प्रसाद पाता गायत्री परिवार, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा — दिनांक 19-07-2026, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि मनुष्य जीवन की साधना के चार चरण हैं। पहली स्थिति में व्यक्ति के भीतर अनेक 'मैं' होते हैं। यही कारण है कि वह सुबह कुछ कहता है, दोपहर में कुछ और, तथा शाम तक उसका विचार बदल जाता है। उसने कहा कि हमारे संकल्प, व्रत और वचन कई बार इसलिए पूरे नहीं हो पाते क्योंकि हमारे भीतर अनेक 'मैं' सक्रिय रहते हैं। जिस 'मैं' ने संकल्प लिया था, वही बाद में सक्रिय नहीं रहता। इसलिए व्यक्ति के भीतर की यह बहुलता ही अधिकांश भ्रम और अस्थिरता का कारण बनती है।

उन्होंने कहा कि साधना का दूसरा चरण अपने भीतर की इस भीड़ को समाप्त कर केवल एक 'मैं' का निर्माण करना है। जब व्यक्ति के भीतर एक ही स्वर, एक ही संकल्प और एक ही व्यक्तित्व रह जाता है, तब उसके वचन, संकल्प और कर्म में स्थिरता आ जाती है। ऐसा व्यक्ति जो कहता है, उसे निभाता भी है। साधना का उद्देश्य व्यक्ति के भीतर की बिखरी हुई चेतना को एकाग्र कर एकत्व की स्थापना करना है।

इस अवसर पर विवेक जी, जो मुख्यमंत्री की सुरक्षा में डीएसपी के पद पर कार्यरत हैं, ने कहा, "यहाँ का वातावरण अत्यंत आध्यात्मिक है। शिक्षा जीवन में सफलता का आधार है और शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।" रागिनी जी, डीएसपी ने कहा, "ज़िंदगी में कुछ बड़ा करने के लिए स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक है।"

दिनांक 19 जुलाई 2026 को गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. अरुण कुमार जायसवाल।

प्रतिभागी

चंदन लगा कर दंपत्ति का स्वागत करते...

पूजन करते

सभा को संबोधित करते विवेक दीप, डीएसपी, मुख्यमंत्री सुरक्षा पटना

संबोधित करते हरीश कुमार,युवा मंडल, सहरसा

सभा को संबोधित करतीं रागिनी, डीएसपी, एटीएस, पटना!

आगामी 29 जुलाई को होनेवाली गुरुपूर्णिमा के आयोजन हेतु 26 जुलाई को जिले की बैठक एवं सावन के अभिषेक संबंधी व्यवस्था के निमित्त विशेष बैठक

दिनांक 25-07-2026 को सहरसा के पंचवटी चौक पर युवा प्रकोष्ठ द्वारा प्रेरणाप्रद साहित्यों के साथ ज्ञान रथ लगाया गया... इस दौरान युवाओं एवं नागरिकों को श्रेष्ठ सत्साहित्य के अध्ययन और नियमित स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया गया....

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में प्रत्येक रविवार को होनेवाले व्यक्तित्व परिष्कार सत्र की जानकारी देते युवाओं के बीच लॉज में गायत्री परिवार, सहरसा के युवा मंडल के सदस्य...

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा | दिनांक 26-07-2026 पटना से आए अतिथियों के मार्गदर्शन में कार्यकर्ता गोष्ठी का विशेष आयोजन गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। दीप प्रज्वलन जोनल समन्वयक मनीष जी, निशांत जी, प्रिंस जी, नागेंद्र शर्मा एवं हरे कृष्ण शाह द्वारा किया गया।

सत्र को संबोधित करते हुए मनीष जी ने कहा कि संगठन को मजबूत बनाना है तथा गुरुदेव के विचारों को घर-घर पहुँचाना है। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार साधना आधारित संगठन है, इसलिए सभी परिजन नियमित रूप से गायत्री मंत्र की पाँच मालाओं का जप अवश्य करें, ताकि गुरुदेव के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए ऊर्जा और उत्साह बना रहे। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय विशेष है और भगवान की शक्ति भारत के साथ है। नवीन भारत का निर्माण हो रहा है। संस्कारवान पीढ़ी के निर्माण के लिए व्यक्ति और समाज—दोनों को श्रेष्ठ बनाना आवश्यक है।

इस अवसर पर निशांत जी ने कहा कि इस महान योजना को सफल बनाने के लिए सभी परिजन नियमित रूप से समयदान एवं अंशदान करें, ताकि बिहार को विश्व के मानस पटल पर एक विशिष्ट पहचान दिलाई जा सके।

कार्यक्रम का संचालन हरीश जी ने किया। वहीं मुरारी जी ने गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा द्वारा किए जा रहे विभिन्न सेवा एवं रचनात्मक कार्यों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की।

अंत में आगामी कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए बताया गया कि 29-07-2026 को गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया जाएगा। इस अवसर पर पूरे दिन अखंड जप का कार्यक्रम आयोजित होगा तथा दीप यज्ञ के साथ कार्यक्रम का समापन किया जाएगा।

साथ ही यह भी बताया गया कि 02-08-2026 को ट्रस्ट की बैठक तथा 13-09-2026 को वार्षिक बैठक आयोजित की जाएगी।

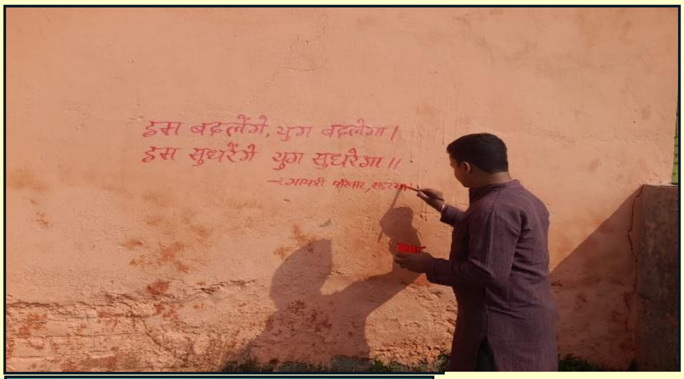

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा | दिनांक 26-07-2026 माह के अंतिम रविवार, दिनांक 26-07-2026 को सहरसा जिले के सत्तरकटैया प्रखंड की पटोरी पंचायत में व्यापक जनजागरण एवं संस्कार अभियान के अंतर्गत 24 नए घरों में देवस्थापना एवं गायत्री यज्ञ संपन्न कराया गया।इस अवसर पर प्रत्येक परिवार को पौधे वितरित किए गए तथा अखंड ज्योति पत्रिका उपलब्ध कराई गई। साथ ही दीवार लेखन के माध्यम से गायत्री परिवार के आदर्शों एवं विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का संदेश दिया गया।इस अभियान में गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा के प्रज्ञा मंडल, महिला मंडल, युवा मंडल, युवती मंडल तथा सत्तरकटैया प्रखंड के सक्रिय परिजनों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। सभी कार्यकर्ताओं ने घर-घर पहुँचकर युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा के विचारों का प्रचार-प्रसार करते हुए परिवारों को संस्कार, साधना, स्वाध्याय एवं सेवा से जुड़ने का आह्वान किया। अभियान समाज में नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना के प्रसार की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।

गुरु पूर्णिमा महोत्सव, गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

सायंकालीन दीप यज्ञ

गुरु पुर्णिमा के अवसर पर दीप यज्ञ की तैयारी करते हुऐ
नन्हें-नन्हें कार्यकर्ता

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

एआइ का प्रयोग रचनात्मक कार्यों के लिए होना चाहिए : डॉ अरुण

- गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित
- तकनीक के सकारात्मक उपयोग के साथ स्वतंत्र सोच, विवेक और मानवीय मूल्यों को विकसित करने पर दिया जोर

प्रतिनिधि, सहरसा

व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में उपस्थित युवा.

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. सत्र में युवाओं को आधुनिक तकनीक के संतुलित उपयोग, स्वतंत्र चिंतन एवं नैतिक मूल्यों के महत्व से अवगत कराया गया. मुख्य वक्ता डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि स्मार्टफोन एवं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) आधुनिक जीवन के उपयोगी साधन हैं, लेकिन इन पर अत्यधिक निर्भरता मनुष्य की मौलिक सोच एवं विवेक के लिए चुनौती बन सकती है. उन्होंने कहा कि एआइ का प्रयोग अच्छे और रचनात्मक कार्यों के लिए होना चाहिए, न कि मानव बुद्धि का विकल्प बनाने के लिए. उन्होंने युवाओं से कहा कि तकनीक का उपयोग करें, उससे सीखें, लेकिन अपनी स्वतंत्र सोच और निर्णय लेने की क्षमता को उसके हवाले नहीं करें. उन्होंने कहा कि एआइ में चतुराई हो सकती है, लेकिन विवेक नहीं.

डॉ जायसवाल ने बताया कि पांच से 10 जुलाई तक स्विट्जरलैंड के जेनेवा में संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में "एआइ फॉर गुड" विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हो रहा है. इसमें अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पांड्या भी भाग लेंगे. सम्मेलन में एआई के सकारात्मक, सुरक्षित एवं मानव कल्याणकारी उपयोग पर व्यापक चर्चा की जायेगी. उन्होंने कहा कि नई तकनीकों ने मानव जीवन को काफी सरल बनाया है, लेकिन सोचने, तर्क करने, विश्लेषण करने एवं विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता केवल मनुष्य के पास है. इसलिए युवाओं को तकनीक के साथ संतुलित व्यवहार अपनाना चाहिए. उन्होंने सक्रिय याददाश्त का अभ्यास करने, क्रिटिकल थिंकिंग विकसित करने तथा ऑनलाइन उपलब्ध जानकारी को विभिन्न स्रोतों से परखने की सलाह दी. उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता का उल्लेख करते हुए कहा कि बुद्धि से भी श्रेष्ठ आत्मा एवं हृदय है.

कार्यक्रम में पूर्व रेलवे अधिकारी राकेश कुमार, अभियंता रंजीत जी, प्रकाश ठाकुर, आलोक जी सहित बड़ी संख्या में गायत्री परिवार के सदस्य, युवा एवं युवतियां उपस्थित रहे. वक्ताओं ने युवाओं से तकनीकी विकास के साथ नैतिकता, मानवीय मूल्यों और आत्मविकास को भी जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने का आह्वान किया. कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं में आधुनिक तकनीक के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास करना था.

एआई विवेक का विकल्प नहीं : डॉ. अरुण

सहरसा| स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने युवाओं को स्मार्टफोन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के संतुलित उपयोग करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि एआई मानव जीवन को आसान बनाने वाली तकनीक है, लेकिन यह मनुष्य के हृदय, संवेदनाओं और विवेक का विकल्प कभी नहीं बन सकती।डॉ. जायसवाल ने कहा कि एआई केवल डाटा प्रोसेसिंग यूनिट है। यह मनुष्य के मस्तिष्क की तरह उपलब्ध सूचनाओं का विश्लेषण कर उत्तर दे सकता है, लेकिन भावनाएं, संवेदनाएं और विवेक विकसित नहीं कर सकता। उन्होंने युवाओं से कहा कि एआई के साथ सीखें और उसका उपयोग करें, लेकिन अपनी सोच को एआई के हवाले न करें।

एआई सोचने में मददगार, लेकिन संवेदना और विवेक का विकल्प नहीं : डॉ. अरुण

सन्मार्ग/सहरसा/सं.। गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में युवाओं को कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्मार्टफोन के संतुलित व जिम्मेदार उपयोग का संदेश दिया गया। मुख्य वक्ता डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि एआई मानव मस्तिष्क की डेटा प्रोसेसिंग क्षमता का विकल्प बन सकता है, लेकिन हृदय, संवेदना, विवेक और आत्मचेतना का नहीं। उन्होंने कहा कि तकनीक का उपयोग मानव कल्याण के लिए होना चाहिए, न कि मौलिक सोच और स्वतंत्र निर्णय क्षमता को कमजोर करने के लिए। संयुक्त राष्ट्र के जेनेवा में एआई फॉर गुड विषय पर होने वाले सम्मेलन का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया एआई के सकारात्मक और नैतिक उपयोग पर मंथन कर रही है। युवाओं से उन्होंने आलोचनात्मक सोच विकसित करने, डिजिटल उपकरणों का सीमित उपयोग करने, पुस्तकों का अध्ययन, पहेलियां हल करने तथा कुछ समय ऑफलाइन रहने की आदत अपनाने की अपील की। गीता के श्लोकों और श्री अरविंद के विचारों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि ज्ञान का आधार हृदय और विवेक है, जिसे कोई तकनीक प्रतिस्थापित नहीं कर सकती। कार्यक्रम में पूर्व रेल अधिकारी राकेश कुमार, अभियंता रंजीत कुमार, प्रकाश ठाकुर, आलोक कुमार, श्यामानन्द लाल दास सहित बड़ी संख्या में गायत्री परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

अच्छे के लिए करना चाहिए ए आई का इस्तेमाल :-डा. अरूण

संवाद सूत्र, जागरण, सहरसा: रविवार को शहर के गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित किया गया। जिसमें कई छात्र- छात्राओं की सहभागिता रही। सत्र को संबोधित करते डा. अरुण कुमार जायसवाल ने स्मार्ट फोन और ए आई कितना सही है के संबंध में उपस्थित युवाओ से कहा- स्मार्टफोन और एआई कितना सही है ? अभी पांच से दस जुलाई स्विट्जरलैंड के जेनेवा में यूनाइटेड नेशन का एक सम्मेलन होने जा रहा है। जिसमें अखिल विश्व गायत्री परिवार के डा. चिन्मय पांड्या भी भाग लेने जा रहे हैं। सम्मेलन का टापिक है एआई फार गुड यह समस्या पूरी दुनिया की है। जैसे हम लोग हमेशा बात करते रहते हैं इंसान को अच्छाई के लिए जीना चाहिए, वैसे ही जेनेवा में जो संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक है उसमें पूरी दुनिया के लोग बात करेंगे कि एआई का इस्तेमाल अच्छे के लिए करना चाहिए, वह कैसे हो? अखबार में इसके बारे में कई लेख निकलते रहे हैं। आज हम एक ऐसे मोड़ पर आ खड़े हुए हैं, जहां तकनीक हमारे स्थित सर्वोच्च विशेषाधिकार यानी सोचने की क्षमता को चुनौती दे रहा है। इस अवसर पर भूतपूर्व राव अधिकारी राकेश कुमार, ई. रंजीत जी ,प्रकाश ठाकुर ,आलोक जी एवं समस्त गायत्री परिजन उपस्थित थे।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

ए आई ब्रेन का सब्सिट्यूट हो सकता है पर हृदय का नहीं: डॉ अरुण जयसवाल

इनसाइट मिथिला

सहरसा गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया।इस सत्र को संबोधित करते डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने स्मार्ट फोन और ए आई कितना सही है के संबंध में उपस्थित युवाओ से कहा स्मार्टफोन और एआई कितना सही?अभी पांच से दस जुलाई स्विट्जरलैंड के जेनेवा में यूनाइटेड नेशन का एक सम्मेलन होने जा रहा है। जिसमें अखिल विश्व गायत्री परिवार के डॉक्टर चिन्मय पांड्या भी भाग लेने जा रहे हैं। सम्मेलन का टॉपिक है एआई फॉर गुडा यह समस्या पूरी दुनिया की है। जैसे हम लोग हमेशा बात करते रहते हैं इंसान को अच्छाई के लिए जीना चाहिए, वैसे ही जेनेवा में जो संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक है, उसमें पूरी दुनिया के लोग बात करेंगे कि एआई का इस्तेमाल अच्छे के लिए करना चाहिए, वह कैसे हो?अखबार में इसके बारे में कई लेख निकलते रहे हैं। अनुभा सिंह ने एक लेख में लिखा है, मौलिक सोचने की क्षमता को चुनौती दे रही है एआई। जब भी किसी नए उपकरण का आविष्कार हुआ है, उसने मानव श्रम को आसान बनाया, पहियों ने हमारे पैरों की थकान हरी, भाप के इंजनों ने बाहुबल की निर्भरता को अप्रसंगिक किया और कंप्यूटर ने जटिल गणनाओं को पलक झपकते ही संभव बना दिया। पर इन तमाम युगांतकारी परिवर्तनों के बीच मनुष्य का मस्तिष्क अक्षुण्ण और सुरक्षित था। सोचना, मौलिक जिज्ञासा करना, संदेह प्रकट करना और वैचारिक अंतरविरोधों से जूझना केवल और केवल मनुष्य का विशेषाधिकार रहा। पर आज हम एक ऐसे मोड़ पर आ खड़े हुए हैं, जहाँ तकनीक हमारे स्थित सर्वोच्च विशेषाधिकार यानी सोचने की क्षमता

को चुनौती दे रहा है।ब्रहमानंद मिश्र का कहना है कि तकनीक के साथ व्यावहारिक संतुलन बिठाना होगा। सक्रिय याददाश्त का अभ्यास करना होगा। क्रिटिकल थिंकिंग की आदत डालनी होगी, ऑनलाइन सर्च करते समय, जानकारी को बिना सोचे समझे मानने के बजाय अनेक सोर्स से तुलना करनी चाहिए, इससे सही समझ बनती है। यानी टेक्नोलॉजी की सीमाओं को समझने से सही फैसला लेने की आदत बनती है। टेक्नोलॉजी का समझदारी भरा प्रयोग करने से दिमाग एक्टिव रहता है। ऑफलाइन रहने की आदत डालनी चाहिए, जिससे किसी स्थान पर टेक्नोलॉजी नहीं होने पर परेशानी न हो। डिजिटल डिवाइस के बिना कुछ समय बिताने से एकाग्रता, चिंतन और स्वतंत्र सोच को बढ़ावा मिलता है। पढ़ना, पहेलियां सुलझाना, भाषा सीखना और म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट बजाने से दिमागी लचीलापन बढ़ता है। डॉक्टर राजेश कुमार भी कहते हैं कि गैजेट्स के प्रयोग में संतुलन जरूरी है, कॉग्निटिव आफलोडिंग के मामले में भी हमें ऐसे ही करने की जरूरत है। आजकल मल्टी टास्किंग अधिक हो गई है। आज लोगों को एक ही समय में बहुत सारे काम कर रहे होते हैं इसलिए जरूरी है कि इसे कम किया जाए और एक समय में एक ही काम किया जाए तो वह ज्यादा बेहतर ढंग से हो पाएगा। हर चीज की एक सीमा होती है, एक साथ सब कुछ याद रखना संभव नहीं है। आप गैजेट्स को पूरी नजर अंदाज तो नहीं कर सकते लेकिन कोशिश कर सकते हैं कि इसका प्रयोग कम करें और जरूरत की चीजों के लिए ही करें, तो ज्यादा बेहतर होगा।हमारे मित्र तो कहते हैं कि एआई भी एक माया है। आदमी की बुद्धि को भमित करने का एक बड़ा नायाब तरीका है। नया तौर तरीका है। चारो तरफ इस समस्या पर चर्चा हो रही है, अखबार टीवी और आम आदमी के आपसी बातचीत में भी इसके प्रति बहुत ही आशंका जाहिर की जा रही है। आज का इंसान प्रत्यक्ष लाभ को देखता है परोक्ष हानि को नहीं देखता है। ज्ञान की दृष्टि विवेक की दृष्टि हमें सच को दिखा देती है। सचमुच ए आई डाटा प्रोसेसिंग यूनिट है। ए आई ब्रेन का सब्सिट्यूट हो सकताहै पर हृदय का नहीं। ब्रेन का जो कॉग्नेटिव सिस्टम है, ए आई उसका सब्सिट्यूट हो सकता है, लेकिन हृदय का सब्स्टीट्यूट नहीं हो सकता। सारे अनुभव हृदय में होते हैं आवनाओं में होते हैं। ए आई आपकी भावनाओं को जनरेट नहीं कर सकता। भगवान कृष्ण गीता के तीसरे अध्याय के बयालीसवें श्लोक में कहते हैं, स्थूल शरीर से श्रेष्ठ बलवान और सूक्ष्म इन्द्रियां है, इंद्रियों से ऊपर मन है, मन से ऊपर बुद्धि है और बुद्धि से भी अत्यंत ऊपर आत्मा है। ब्रेन भी डाटा प्रोसेसिंग यूनिट है, जो जन्म से लेकर के अभी तक आपने जो सोचा विचारा, जो आपको अनुभव हुआ वह सारा ब्रेन में है। ब्रेन उसको प्रोसेस करके जवाब देता है। ए आई आपके ब्रेन प्रोसेसिंग यूनिट की तरह जो डाटा मनुष्य ने फीड किया है, उस डेटा को प्रोसेस करके जवाब देता है। जैसे इंसान की बुद्धि से हम अच्छा बुरा कर सकते हैं, उसी तरह एआई में भी तिकड़म करके हम अच्छा बुरा कर सकते हैं। भगवान गीता में कहते हैं कि जानकारी का करण मन को बुद्धि को बताते है पर ज्ञान का करण हृदय को बताते हैं। वे कहते हैं श्रद्धावान लब्धते ज्ञानम, श्रद्धा जो हृदय में रहती है वहाँ व्यक्ति ज्ञान को उपलब्ध होता है। ईश्वरा सर्व भूतनाम हृदयेशे अर्जुन तिष्ठति, ईश्वर हृदय में स्थित है। कहने का मतलब है मनुष्य या यूँ कहें जीव चेतना का केंद्र हृदय है।श्री अरविंद ने कहा कि अतिमानव वह नहीं जो सबसे बड़ा ताकतवर है वरन वह जो संवेदनशील हो, परमात्मा की ओर दो कदम बढ़ चुका हो और परमात्मा का उसे सहज सामीप्य और सानिध्य प्राप्त हो। देव विद्या और असुर विद्या हमेशा परमात्मा को केंद्र में रखकर काम नहीं करते, देवता भी अभिमान से करते हैं, असुर भी अपने अभिमान से करते हैं। ऋषि हमेशा परमात्मा को केंद्र में रखकर काम करते हैं। इसलिए उनके कार्य में हमेशा सृजनशीलता और विविध प्रकार से परमेश्वर के प्रकाश को और परमेश्वर की चेतना को अभिव्यक्ति करने की कोशिश होती है। एआई किस बात का द्योतक है? इंसान की चेतना ज्यादा बुद्धिशाली हो गई है, लेकिन ज्यादा प्रकाशित नहीं हुई है। इंसान में जो क्षमता अभी जागृत हो रही है या विकसित हो रही है, वह उसकी प्रतिभा है, उसकी प्रज्ञा नहीं है, मतलब विवेक नहीं है। एआई में विवेक नहीं है उसमें चतुराई है, क्योंकि उसमें वही फीड किया गया है, विवेक फीड में नहीं किया जा सकता क्योंकि उसमें इमोशन डाला नहीं जा सकता। जोड़ तोड़ कर वह कोई भी इन्फॉर्मेशन परोस देता है, यही उसकी चालाकी है। इसलिए एआईए के साथ सोचें, सीखें पर एआईए के द्वारा सोचा जाना हम स्वीकार नहीं करें। इस बात के लिए हम सभी लोग अलर्ट रहें, जागरूक रहे।इस अवसर पर भूतपूर्व रॉ अधिकारी राकेश कुमार इंजीनियर-रंजीत जी ,प्रकाश ठाकुर ,आलोक जी एवं समस्त गायत्री परिजन उपस्थित थे।

पटना, सोमवार
06 जुलाई 2026 | 02

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

ए आई ब्रेन का सब्सिट्यूट हो सकता है पर हृदय का नहीं: डॉ अरुण जयसवाल

मीडिया दस्तक/ सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया।इस सत्र को संबोधित करते डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने स्मार्ट फोन और ए आई कितना सही है के संबंध में उपस्थित युवाओ से कहा स्मार्टफोन और एआई कितना सही?अभी पांच से दस जुलाई स्विट्जरलैंड के जेनेवा में यूनाइटेड नेशन का एक सम्मेलन होने जा रहा है। जिसमें अखिल विश्व गायत्री परिवार के डॉक्टर चिन्मय पांड्या भी भाग लेने जा रहे हैं। सम्मेलन का टॉपिक है एआई फॉर गुडा यह समस्या पूरी दुनिया की है। जैसे हम लोग हमेशा बात करते रहते हैं इंसान को अच्छाई के लिए जीना चाहिए, वैसे ही जेनेवा में जो संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक है, उसमें पूरी दुनिया के लोग बात करेंगे कि एआई का इस्तेमाल अच्छे के लिए करना चाहिए, वह कैसे हो?अखबार में इसके बारे में कई लेख निकलते रहे हैं। अनुभा सिंह ने एक लेख में लिखा है, मौलिक सोचने की क्षमता को चुनौती दे रही है एआई। जब भी किसी नए उपकरण का आविष्कार हुआ है, उसने मानव श्रम को आसान बनाया, पहियों ने हमारे पैरों की थकान हरी, भाप के इंजनों ने बाहुबल की निर्भरता को अप्रसंगिक किया और कंप्यूटर ने जटिल गणनाओं को पलक झपकते ही संभव बना दिया। पर इन तमाम युगांतकारी परिवर्तनों के बीच मनुष्य का मस्तिष्क अक्षुण्ण और सुरक्षित था। सोचना, मौलिक जिज्ञासा करना, संदेह प्रकट करना और वैचारिक अंतरविरोधों से जूझना केवल और केवल मनुष्य का विशेषाधिकार रहा। पर आज हम एक ऐसे मोड़ पर आ खड़े हुए हैं, जहाँ तकनीक हमारे स्थित सर्वोच्च विशेषाधिकार यानी सोचने की क्षमता को चुनौती दे रहा है।ब्रहमानंद मिश्र का कहना है कि तकनीक के साथ व्यावहारिक संतुलन बिठाना होगा। सक्रिय याददाश्त का अभ्यास करना होगा। क्रिटिकल थिंकिंग की आदत डालनी होगी, ऑनलाइन सर्च करते समय, जानकारी को बिना सोचे समझे मानने के बजाय अनेक सोर्स से तुलना करनी चाहिए, इससे सही समझ बनती है। यानी टेक्नोलॉजी की सीमाओं को समझने से सही फैसला लेने की आदत बनती है। टेक्नोलॉजी का समझदारी भरा प्रयोग करने से दिमाग एक्टिव रहता है। ऑफलाइन रहने की आदत डालनी चाहिए, जिससे किसी स्थान पर टेक्नोलॉजी नहीं होने पर परेशानी न हो। डिजिटल डिवाइस के बिना कुछ समय बिताने से एकाग्रता, चिंतन और स्वतंत्र सोच को बढ़ावा मिलता है। पढ़ना, पहेलियां सुलझाना, भाषा सीखना और म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट बजाने से दिमागी लचीलापन बढ़ता है। डॉक्टर राजेश कुमार भी कहते हैं कि गैजेट्स के प्रयोग में संतुलन जरूरी है, कॉग्निटिव आफलोडिंग के मामले में भी हमें ऐसे ही करने की जरूरत है। आजकल मल्टी टास्किंग अधिक हो गई है। आज लोगों को एक ही समय में बहुत सारे काम कर रहे होते हैं इसलिए जरूरी है कि इसे कम किया जाए और एक समय में एक ही काम किया जाए तो वह ज्यादा बेहतर ढंग से हो पाएगा। हर चीज की एक सीमा होती है, एक साथ सब कुछ याद रखना संभव नहीं है।

तकनीक साथ व्यावहारिक संतुलन है जरूरी: अरुण

गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित युवा।

सहरसा, निज संवाददाता। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने स्मार्ट फोन और ए आई कितना सही है के संबंध में उपस्थित युवाओ से कहा स्विट्जरलैंड के जेनेवा में यूनाइटेड नेशन का एक सम्मेलन होने जा रहा है. जिसमें अखिल विश्व गायत्री परिवार के डॉक्टर चिन्मय पांड्या भी भाग लेने जा रहे हैं। सम्मेलन का टॉपिक है एआई फॉर गुडा। उसमें पूरी दुनिया के लोग बात करेंगे कि एआई का इस्तेमाल अच्छे के लिए करना चाहिए, वह कैसे हो। कहा गया कि जब भी किसी नए उपकरण का आविष्कार हुआ है, उसने मानव श्रम को आसान बनाया। पर आज हम एक ऐसे मोड़ पर आ खड़े हुए हैं, जहां तकनीक हमारे स्थित सर्वोच्च विशेषाधिकार यानी सोचने की क्षमता को चुनौती दे रहा है। ब्रहमानंद मिश्र का कहना है तकनीक के साथ व्यावहारिक संतुलन बिठाना होगा। सक्रिय याददाश्त का अभ्यास करना होगा। क्रिटिकल थिंकिंग की आदत डालनी होगी। पढ़ना, पहेलियां सुलझाना, भाषा सीखना और म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट बजाने से दिमागी लचीलापन बढ़ता है। आप गैजेट्स को पूरी नजर अंदाज तो नहीं कर सकते लेकिन इसका प्रयोग कम करने की कोशिश कर सकते। जरूरत की चीजों के लिए ही करें, तो ज्यादा बेहतर होगा।इस अवसर पर भूतपूर्व रॉव अधिकारी राकेश कुमार इंजीनियर-रंजीत जी ,प्रकाश ठाकुर ,आलोक एवं समस्त गायत्री परिजन उपस्थित थे।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

ए आई ब्रेन का सब्सिट्यूट हो सकता है पर हृदय का नहीं: डॉ अरुण जयसवाल

नवबिहार दूत संवाददाता

सहरसा: गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र को संबोधित करते डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने स्मार्ट फोन और ए आई कितना सही है के संबंध में उपस्थित युवाओ से कहा स्मार्टफोन और एआई कितना सही अभी पांच से दस जुलाई स्विट्जरलैंड के जेनेवा में यूनाइटेड नेशन का एक सम्मेलन होने जा रहा है। जिसमें अखिल विश्व गायत्री परिवार के डॉक्टर चिन्मय पांड्या भी भाग लेने जा रहे हैं। सम्मेलन का टॉपिक है एआई फॉर गुडा यह समस्या पूरी दुनिया की है। जैसे हम लोग हमेशा बात करते रहते हैं इंसान को अच्छाई के लिए जीना चाहिए, वैसे ही जेनेवा में जो संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक है, उसमें पूरी दुनिया के लोग बात करेंगे कि एआई का इस्तेमाल अच्छे के लिए करना चाहिए, वह कैसे हो? अखबार में इसके बारे में कई लेख निकलते रहे हैं।

अनुभा सिंह ने एक लेख में लिखा है, मौलिक सोचने की क्षमता को चुनौती दे रही है एआई। जब भी किसी नए उपकरण का आविष्कार हुआ है, उसने मानव श्रम को आसान बनाया, पहियों ने हमारे पैरों की थकान हरी,

भाप के इंजनों ने बाहुबल की निर्भरता को अप्रसंगिक किया और कंप्यूटर ने जटिल गणनाओं को पलक झपकते ही संभव बना दिया। पर इन तमाम युगांतकारी परिवर्तनों के बीच मनुष्य का मस्तिष्क अक्षुण्ण और सुरक्षित था। सोचना, मौलिक जिज्ञासा करना, संदेह प्रकट करना और वैचारिक अंतरविरोधों से जूझना केवल और केवल मनुष्य का विशेषाधिकार रहा। पर आज हम एक ऐसे मोड़ पर आ खड़े हुए हैं, जहाँ तकनीक हमारे स्थित सर्वोच्च विशेषाधिकार यानी सोचने की क्षमता को चुनौती दे रहा है। ब्रहमानंद मिश्र का कहना है कि तकनीक के साथ व्यावहारिक संतुलन बिठाना होगा। सक्रिय याददाश्त का अभ्यास करना होगा। क्रिटिकल थिंकिंग की आदत डालनी होगी, ऑनलाइन सर्च करते समय, जानकारी को बिना सोचे समझे मानने के बजाय अनेक सोर्स से तुलना करनी चाहिए, इससे सही समझ बनती है।

यानी टेक्नोलॉजी की सीमाओं को समझने से सही फैसला लेने की आदत बनती है। टेक्नोलॉजी का समझदारी भरा प्रयोग करने से दिमाग एक्टिव रहता है। ऑफलाइन रहने की आदत डालनी चाहिए, जिससे किसी स्थान पर टेक्नोलॉजी नहीं होने पर परेशानी न हो। डिजिटल डिवाइस के बिना कुछ समय बिताने से एकाग्रता, चिंतन और स्वतंत्र सोच को बढ़ावा मिलता है। पढ़ना, पहेलियां सुलझाना, भाषा सीखना और म्यूज़िकल इंस्ट्रूमेंट बजाने से दिमागी लचीलापन बढ़ता है।

कार्यक्रम. स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में विशेष संगोष्ठी का किया गया आयोजन

आरएसएस के शताब्दी वर्ष पर हुआ युवा संवाद, राष्ट्र निर्माण व पंच परिवर्तन पर मंथन

कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि.

शपथ लेते युवा.

प्रतिनिधि, सहरसा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना के शताब्दी वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में रविवार को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में युवा संवाद के तहत एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया. इस संगोष्ठी का मुख्य विषय राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका थी. कार्यक्रम का भव्य उद्घाटन गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल, संघ के विभाग प्रचारक सुमित जी एवं सिंडिकेट सदस्य मेजर डॉ गौतम कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया. इस संवाद कार्यक्रम में शहर के प्रबुद्ध नागरिकों एवं भारी संख्या में युवाओं ने पूरे उत्साह के साथ सहभागिता की.

संस्कारित व संगठित युवा ही विकसित भारत की नींव : संगोष्ठी को संबोधित करते ह मुख्य ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा देने एवं राष्ट्र निर्माण के प्रति उनके उत्तरदायित्वों पर विशेष जोर दिया. उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में सेवा, संगठन, सामाजिक समरसता एवं भारतीय संस्कृति का संरक्षण सबसे बड़ी आवश्यकता है. संस्कारित, संगठित एवं जागरूक युवा ही एक विकसित, आत्मनिर्भर एवं गौरवशाली भारत की मजबूत आधारशिला रख सकते हैं. उन्होंने युवाओं से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपनी सक्रिय एवं सकारात्मक भागीदारी सुनिश्चित करने का आह्वान किया.

शताब्दी वर्ष का लक्ष्य पंच परिवर्तन

आरएसएस के विभाग प्रचारक सुमित जी ने अपने संबोधन में कहा कि भारत आज कई प्रकार की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक चुनौतियों का सामना कर रहा है. इन चुनौतियों का स्थायी समाधान तभी संभव है, जब देश का युवा वर्ग राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते अपने कर्तव्यों के प्रति सजग बने. उन्होंने युवाओं से सकारात्मक सोच, अनुशासन एवं राष्ट्रभक्ति के साथ आगे बढ़ने का आग्रह किया. उन्होंने इस अवसर पर संघ के शताब्दी वर्ष के मुख्य लक्ष्य पंच परिवर्तन पर विस्तार से चर्चा की एवं इसके पांच प्रमुख बिंदुओं को युवाओं के बीच रखा. उन्होंने कहा कि ये पंच प्रमुख बिंदु हैं समाज में भेदभाव मिटाकर एकता लाना, प्रकृति व पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी निभाना, देश के नियमों एवं नागरिक धर्म का पालन करना, पारिवारिक मूल्यों और संस्कारों को जीवित रखना एवं स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देना व राष्ट्रीय गौरव की भावना जगाना है.

सुरक्षा व विकास में युवाओं की भूमिका निर्णायक

सिंडिकेट सदस्य मेजर डॉ गौतम कुमार ने कहा कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं निर्णायक होती है. देश की सुरक्षा, विकास और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में युवाओं का सकारात्मक योगदान अनिवार्य है. उन्होंने युवाओं को अपने व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के प्रति सदैव समर्पित रहने का संदेश दिया.

राष्ट्रसेवा का लिया गया संकल्प

कार्यक्रम के समापन पर सिंडिकेट सदस्य ने मौजूद सभी युवाओं को राष्ट्रहित एवं समाज कल्याण के कार्यों के लिए संकल्प दिलाया. इस अवसर पर मुख्य रूप से ज्ञानू, ललन सिंह, प्रखर, मनोज, सनोज सहित भारी संख्या में स्थानीय युवा, स्वयंसेवक सहित गणमान्य मौजूद थे.

राष्ट्र की चेतना जागृत होने पर ही देश होता है जीवंत

प्रतिनिधि, सहरसा

मरीज की जांच करतीं चिकित्सक.

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. इसमें डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने राष्ट्र निर्माण, शिक्षा और व्यक्तित्व विकास पर अपने विचार व्यक्त किये. उन्होंने कहा कि देश केवल भूभाग नहीं, बल्कि राष्ट्र उसकी चेतना है. राष्ट्र को जीवंत बनाने के लिए समाज की चेतना का जागृत होना आवश्यक है. उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि अरविंद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ केशव बलिराम हेडगेवार, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य तथा गीता प्रेस जैसे संस्थानों ने भारतीय समाज की सुप्त चेतना को जगाने का कार्य किया. डॉ जायसवाल ने कहा कि पाठ्यक्रम का प्रत्येक विषय जीवन से जुड़ा होता है. इतिहास, गणित, विज्ञान अथवा अन्य विषयों को केवल परीक्षा तक सीमित नहीं समझना चाहिए. जब विद्यार्थी विषयों को अपने जीवन और समाज से जोड़कर देखेंगे, तब पढ़ाई में रुचि बढ़ेगी और उसकी उपयोगिता स्वतः समझ में आने लगेगी. उन्होंने कहा कि शिक्षक और चिकित्सक समाज निर्माण के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं. दोनों को अपने दायित्व का ईमानदारी से निर्वहन करना चाहिए. विषय की गहराई और उसके व्यावहारिक महत्व को समझने से ही ज्ञान सार्थक बनता है. होमियोपैथिक चिकित्सक डॉ रूपम ने निशुल्क स्वास्थ्य जांच कर दवाइयों का वितरण किया. आयोजकों ने बताया कि प्रत्येक माह के द्वितीय एवं अंतिम रविवार को नियमित रूप से निशुल्क चिकित्सा सेवा उपलब्ध करायी जायेगी. वहीं अखंड ज्योति आई हॉस्पिटल, मस्तिचक (छपरा) के सहयोग से गायत्री शक्तिपीठ परिसर में निशुल्क नेत्र जांच एवं मोतियाबिंद जांच महाशिविर का आयोजन किया गया.

समाज में सकारात्मक बदलाव लाने को आगे आएं

शताब्दी वर्ष

सहरसा, निज संवाददाता। रविवार को शहर के गायत्री शक्तिपीठ में युवा संवाद का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना के शताब्दी वर्ष पूरे होने आयोजित युवा संवाद के तहत राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम का उदघाटन मुख्य ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल, विभाग प्रचारक सुमित और बीएनएमयू के सिंडिकेट सदस्य मेजर डॉ. गौतम कुमार ने किया। संवाद कार्यक्रम में शहर के बड़ी संख्या में युवाओं और प्रबुद्ध नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। इस संगोष्ठी में मुख्य ट्रस्टी ने राष्ट्र निर्माण के प्रति युवाओं के दायित्वों और उनकी ऊर्जा को सही दिशा देने पर विशेष जोर दिया। उनहोंने इस कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं को समाज में सकारात्मक बदलाव लाने और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि सेवा, संगठन, सामाजिक समरसता और भारतीय संस्कृति का संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि संस्कारित, संगठित और जागरूक युवा ही विकसित, आत्मनिर्भर एवं गौरवशाली भारत के निर्माण की मजबूत आधारशिला रख सकते हैं। विभाग प्रचारक ने कहा कि भारत आज अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों का स्थायी और प्रभावी समाधान तभी संभव है, जब देश का युवा वर्ग राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति सजग बने।

सिंडिकेट सदस्य ने कहा देश की सुरक्षा, विकास और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में युवाओं का सकारात्मक योगदान अनिवार्य है। उन्होंने युवाओं को अपने व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के प्रति समर्पित रहने का संदेश दिया। इस अवसर पर ज्ञानू, ललन सिंह, प्रखर, मनोज, सनोज सहित भारी संख्या में युवा उपस्थित थे।

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में युवा संवाद का उद्घाटन करते मुख्य ट्रस्टी व अन्य।

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित सत्र में मौजूद युवा।

शिक्षा जीवन को बनाती है अर्थपूर्ण

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ मे व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। युवाओं को संबोधित करते हुए डा. अरूण कुमार जायसवाल ने कहा कि शिक्षा मानव जीवन को सार्थक बनाती है। जब किसी भी विषय को हम अपने जीवन से जोड़ कर देखेंगे तो वह निरर्थक नहीं अर्थपूर्ण लगने लगेगा। तब हमारी पढाई मे रुचि जगने लगेगी। हमे उसको जानने समझने की चाहत उत्पन्न होगी। सारे विषय हमारी जिंदगी के गणित है, हमारे जीवनसे गुथे हुए है। उसको हम समझने की कोशिश करें तो पता चलता है कि पाठ्यक्रम के सारे विषय वस्तु किस तरह हमारे जीवन से जुड़ता है उस विषय को समझने के चक्कर में आप अपने को समझाने लगेंगे। इस अवसर पर होमियोपेथिक चिकित्सिक डा. रूपम द्वारा दबाई एवं जांच किया गया।

शताब्दी वर्ष पर आरएसएस का युवा संवाद

सहरसा | राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर सहरसा में युवाओं को राष्ट्र निर्माण से जोड़ने के उद्देश्य से युवा संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल, संघ के विभाग प्रचारक डॉ. गौतम कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि युवा देश की सबसे बड़ी शक्ति हैं। आरएसएस के विभाग प्रचारक सुमित ने कहा कि भारत वर्तमान समय में कई सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक चुनौतियों का सामना कर रहा है।

चेतना जागरण से ही बनेगा सशक्त राष्ट्र : जायसवाल

सहरसा | गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में रविवार को आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में मुख्य ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने राष्ट्र, शिक्षा और जीवन मूल्यों पर विस्तार से विचार रखे। उन्होंने कहा कि देश केवल भूभाग और भूगोल नहीं है, बल्कि उसकी अपनी चेतना होती है। इसी चेतना के जागरण से राष्ट्र जीवंत और सशक्त बनता है। डॉ. जायसवाल ने कहा कि भारत की चेतना कभी समाप्त नहीं हुई, बल्कि कुछ समय के लिए सुप्त अवस्था में चली गई थी। इस चेतना को जगाने के लिए स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि अरविंद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार, गायत्री परिवार के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य सहित कई महापुरुषों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ. जायसवाल ने पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का उदाहरण देते हुए कहा कि एक अच्छे शिक्षक का प्रभाव समाज पर दूरगामी होता है। उन्होंने कहा कि विषय के प्रति तादात्म्य और उसकी उपयोगिता समझना जरूरी है। इस अवसर पर होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. रूपम द्वारा निःशुल्क दवा एवं जांच की गई। प्रत्येक माह के द्वितीय एवं अंतिम रविवार को नियमित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। वहीं निःशुल्क नेत्र जांच एवं मोतियाबिंद जांच शिविर का भी आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका पर संगोष्ठी आयोजित

इनसाइट मिथिला

सहरसा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) अपनी स्थापना के 100 वर्ष (शताब्दी वर्ष) पूरे होने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहरसा द्वारा गायत्री शक्तिपीठ में 'युवा संवाद' के तहत राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल, विभाग प्रचारक सुमित जी और सिंडिकेट सदस्य मेजर डॉ. गौतम कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया।संवाद कार्यक्रम में शहर के बड़ी संख्या में युवाओं और प्रबुद्ध नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। इस संगोष्ठी में मुख्य ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने राष्ट्र निर्माण के प्रति युवाओं के दायित्वों और उनकी ऊर्जा को सही दिशा देने पर विशेष जोर दिया। उनहोंने इस कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं को समाज में सकारात्मक बदलाव लाने और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित किया उन्होंने कहा कि सेवा, संगठन, सामाजिक समरसता और भारतीय संस्कृति का संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि संस्कारित, संगठित और जागरूक युवा ही विकसित, आत्मनिर्भर एवं गौरवशाली भारत के निर्माण की मजबूत आधारशिला रख सकते हैं। उन्होंने युवाओं को समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाने और राष्ट्रहित के कार्यों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की प्रेरणा दी। आर एस एस के विभाग प्रचारक सुमितजी. ने कहा कि भारत आज अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों का स्थायी और प्रभावी समाधान तभी संभव है, जब देश का युवा वर्ग राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति सजग बने। उन्होंने युवाओं से सकारात्मक सोच, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति के साथ आगे बढ़ने का आग्रह किया: उन्होंने ने संघ के शताब्दी वर्ष के लक्ष्य 'पंच परिवर्तन' को युवाओं तक पहुँचाया इसके तहत सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्यों का निर्वहन, कुटुंब प्रबोधन (पारिवारिक मूल्य), और स्वदेशी/स्वाभिमान का प्रसार विषय पर विषतार से चर्चा किया ।सिंडिकेट सदस्य मेजर डॉ गौतम कुमार ने कहा कि अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक होती है। उन्होंने कहा कि देश की सुरक्षा, विकास और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में युवाओं का सकारात्मक योगदान अनिवार्य है। उन्होंने युवाओं को अपने व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के प्रति समर्पित रहने का संदेश दिया।इस अवसर पर ज्ञानू, ललन सिंह, प्रखर, मनोज, सनोज सहित भारी संख्या में युवा उपस्थित थे।अंत में सिंडिकेट सदस्य द्वारा संकल्प भी कराया गया

बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल एवं उत्तर प्रदेश में एक साथ प्रसारित ISSN 2582-4813

सीमांचल उदय

RNI No. : BIHHIN/2018/77310 राष्ट्रीय संध्या हिन्दी दैनिक डिजिटल

पूर्णिया/पटना 12 जुलाई 2026 (रविवार) वर्ष : 03 अंक : 338 www.simanchaluday.com मूल्य : 5 मात्र

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण :ट्रस्टी डा अरुण कुमार जायसवाल

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के शताब्दी वर्ष पूरी होने पर संघ के जिला शाखा द्वारा स्थानीय गायत्री शक्ति पीठ में युवा संवाद संगोष्ठी आयोजित

मनोज झा

सहरसा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष (शताब्दी वर्ष) पूरा होने पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जिला शाखा द्वारा रविवार को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में 'युवा संवाद' के तहत राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका बिषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी कार्यक्रम का उद्घाटन गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल, विभाग प्रचारक सुमित जी और सिंडिकेट सदस्य मेजर डॉ. गौतम कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया।संगोष्ठी कार्यक्रम में शहर के युवाओं और प्रबुद्ध नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिये। संगोष्ठी को संबोधित करते गायत्री शक्ति पीठ के मुख्य ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने राष्ट्र निर्माण के लिए युवाओं के दायित्वों और उनकी ऊर्जा को सही दिशा देने पर विशेष जोर दिये। उनहोंने इस कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं को समाज में सकारात्मक बदलाव लाने और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित किये।उन्होंने कहा की सेवा, संगठन, सामाजिक समरसता और भारतीय संस्कृति का संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। संस्कारित, संगठित और जागरूक युवा ही विकसित, आत्मनिर्भर एवं गौरवशाली भारत के निर्माण की मजबूत आधारशिला रख सकते हैं।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विभाग प्रचारक सुमितजी ने कहा की भारत आज अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों का स्थायी और प्रभावी समाधान तभी संभव है, जब देश का युवा वर्ग राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति सजग बने रहेंगे। उन्होंने युवाओं से सकारात्मक सोच, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति के साथ आगे बढ़ने का आग्रह किये। उन्होंने संघ के शताब्दी वर्ष के लक्ष्य 'पंच परिवर्तन' को युवाओं तक पहुंचाने की कोशिश भी की।

उन्होंने सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्यों का निर्वहन, कुटुंब प्रबोधन (पारिवारिक मूल्य), और स्वदेशी स्वाभिमान विषय को लेकर विस्तार से चर्चा किये । इस अवसर पर बीएन मंडल विश्वविद्यालय ,मधेपुरा के सिंडिकेट सदस्य मेजर डॉ गौतम कुमार ने कहा की राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में युवाओं की भूमिका अत्यंत ही महत्वपूर्ण और निर्णायक होती है। देश की सुरक्षा, देश का विकास और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में युवाओं का सकारात्मक योगदान भी अनिवार्य है। उन्होंने युवाओं को अपने व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के प्रति भी समर्पित रहने का संदेश दिये। इस संगोष्ठी में अन्य लोगों के अलावे ज्ञानू, ललन सिंह, प्रखर, मनोज एवं सनोज भी उपस्थित थे।संगोष्ठी के अंत में सिंडिकेट सदस्य द्वारा उपस्थित लोगों को संकल्पित भी कराया गया

देश को जीवंत रखने के लिए चेतना की जरूरत

संबोधित करते ट्रस्टी • सौजन्य. गायत्री शक्तिपीठ

संस, सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार सत्र संपन्न हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि

देश भूभाग है, भूगोल है । राष्ट्र उसकी चेतना है , तो देश को जीवंत करने के लिए चेतना की जरूरत होती है। किसी को जगाने के लिए कितना मेहनत करना पड़ता है ? उसी प्रकार भारत के तमस को, जड़ता को, सुसुप्त अवस्था को हटाने के लिए स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण परमहंस को 100 साल लगे। इसी कड़ी में महर्षि अरविंद लगे, डाक्टर हेडगेवार लगे जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक हैं।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य लगे जो गायत्री परिवार के सूत्र संचालक हैं, गीता प्रेस भी लगा। आलस और प्रमाद से भरा जीवन था अपने भारत का। मतलब हमारी चेतना लुप्त तो नहीं थी, सुप्त जरूर थी । उसी के जागरण के लिए यह सारा काम हुआ। मौके पर बड़ी संख्या में गायत्री परिजन मौजूद रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा गायत्री शक्तिपीठ मे राष्ट्र निर्माण मे युवक सबहक भूमिका पर संगोष्ठी क आयोजन

सहरसा | समदिया

स्थापना कए 100 वर्ष (शताब्दी वर्ष) पूरा होयबाक अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस), सहरसा, गायत्री शक्तिपीठ मे युवा संवाद क बैनर कए तहत राष्ट्र निर्माण मे युवक सबहक भूमिका पर संगोष्ठी क आयोजन कयल गेल।कार्यक्रम क उद्घाटन गायत्री शक्तिपीठ केर मुख्य न्यासी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल, विभाग प्रचारक सुमित जी, एवं सिन्डिकेट सदस्य मेजर डॉ. गौतम कुमार द्वारा दीप प्रज्वलित क भेल।संवाद कार्यक्रम मे शहरक पैघ संख्या मे युवा आ प्रबुद्ध नागरिक उत्साहपूर्वक भाग लेलनि।एहि संगोष्ठी मे मुख्य न्यासी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल युवा कए राष्ट्र निर्माण कए प्रति जिम्मेदारी आ अपन ऊर्जा कए सही दिशा मे चैनलिंग पर विशेष जोर देलनि।एहि कार्यक्रम क माध्यम सँ युवक कए समाज मे सकारात्मक परिवर्तन लयबाक आओर आत्मनिर्भर भारत क निर्माण मे सक्रिय भूमिका निभाबै लेल प्रेरित कयलनि। हुनक कहना छल कि सेवा, संगठन, सामाजिक सौहार्द, आओर भारतीय संस्कृति केर संरक्षण वर्तमान समय केर सबसें पैघ जरूरत अछि । हुनक कहना छल कि विकसित, आत्मनिर्भर, आओर गौरवशाली भारत कए निर्माण लेल केवल संस्कारी, संगठित, आओर जागरूक युवा ही मजबूत नींव राखि सकैत अछि । युवा सब कए अपन सामाजिक जिम्मेदारी क निर्वहन आ राष्ट्रीय कल्याणकारी गतिविधि मे सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करबाक लेल प्रोत्साहित केलनि। आरएसएस विभाग प्रचारक सुमित जी कहलनि कि भारत आई अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, आओर वैचारिक चुनौती केर सामना क रहल अछि। ई चुनौति केर स्थायी आओर प्रभावी समाधान तखन संभव अछि जखन देश केर युवा अपन कर्तव्य आओर जिम्मेदारी क प्रति जागरूक भ जायत अछि, जकरा मे राष्ट्रीय हित क सर्वोच्च प्राथमिकता देल जाय । युवा सब स सकारात्मक सोच, अनुशासन, आ देशभक्ति सँ आगू बढ़बाक आग्रह केलथि। सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्यक निर्वहन, पारिवारिक प्रबुद्धता (पारिवारिक मूल्य), आ स्वदेशी/आत्मसम्मान केर संवर्धन क विषय पर विस्तार सँ चर्चा करैत आरएसएस कए शताब्दी वर्ष क लक्ष्य "पंच परिवर्तन" कए युवा सब तक पहुंचेलनि। सिन्डिकेट सदस्य मेजर डॉ. गौतम कुमार अपन संबोधन मे कहलनि कि राष्ट्र निर्माण क प्रक्रिया मे युवा क भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण आओर निर्णायक अछि ।ओ कहलनि कि राष्ट्र क सुरक्षा, विकास, आओर सांस्कृतिक मूल्य क संरक्षण लेल युवा सबकें सकारात्मक योगदान बहुत जरूरी अछि । युवा सब कए समाज आ राष्ट्र क प्रति समर्पित रहय लेल प्रोत्साहित केलनि, संगहि अपन व्यक्तित्व क विकास सेहो केलनि। एहि अवसर पर ज्ञानू, ललन सिंह, प्रखर, मनोज, आ सनोज सहित पैघ संख्या मे युवा उपस्थित छलाह । अंततः सिन्डिकेट सदस्य द्वारा एकटा प्रस्ताव सेहो संकल्प दियाओल गेल ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा गायत्री शक्तिपीठ में राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका पर एक संगोष्ठी आयोजित

नवबिहार दूत संवाददाता

सहरसा: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) अपनी स्थापना के 100 वर्ष (शताब्दी वर्ष) पूरे होने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहरसा द्वारा गायत्री शक्तिपीठ में 'युवा संवाद' के तहत राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल, विभाग प्रचारक सुमित जी और सिंडिकेट सदस्य मेजर डॉ. गौतम कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया।संवाद कार्यक्रम में शहर के बड़ी संख्या में युवाओं और प्रबुद्ध नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

इस संगोष्ठी में मुख्य ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने राष्ट्र निर्माण के प्रति युवाओं के दायित्वों और उनकी ऊर्जा को सही दिशा देने पर विशेष जोर दिया। उनहोंने इस कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं को समाज में सकारात्मक बदलाव लाने और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित किया

उन्होंने कहा कि सेवा, संगठन, सामाजिक समरसता और भारतीय संस्कृति का संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि संस्कारित, संगठित और जागरूक युवा ही विकसित, आत्मनिर्भर एवं गौरवशाली भारत के निर्माण की मजबूत आधारशिला रख सकते हैं। उन्होंने युवाओं को समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाने और राष्ट्रहित के कार्यों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की प्रेरणा दी। आर एस एस के विभाग प्रचारक सुमितजी. ने कहा कि भारत आज अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों का स्थायी और प्रभावी समाधान तभी संभव है, जब देश का युवा वर्ग राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति सजग बने। उन्होंने युवाओं से सकारात्मक सोच, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति के साथ आगे बढ़ने का आग्रह किया: उन्होंने ने संघ के शताब्दी वर्ष के लक्ष्य 'पंच परिवर्तन' को युवाओं तक पहुँचाया इसके तहत सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्यों का निर्वहन, कुटुंब प्रबोधन (पारिवारिक मूल्य), और स्वदेशी /स्वाभिमान का प्रसार विषय पर विषतार से चर्चा किया। सिंडिकेट सदस्य मेजर डॉ गौतम कुमार ने कहा कि अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक होती है। उन्होंने कहा कि देश की सुरक्षा, विकास और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में युवाओं का सकारात्मक योगदान अनिवार्य है। उन्होंने युवाओं को अपने व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के प्रति समर्पित रहने का संदेश दिया। इस अवसर पर ज्ञानू, ललन सिंह, प्रखर, मनोज, सनोज सहित भारी संख्या में युवा उपस्थित थे।अंत में सिंडिकेट सदस्य द्वारा संकल्प भी कराया गया

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका अहम : डॉ. अरुण

■ सकारात्मक सोच व संस्कार से बनेगा विकसित भारत

सन्मार्ग/सहरसा/सं.। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में युवा संवाद के तहत राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल, आरएसएस के विभाग प्रचारक सुमित जी तथा सिंडिकेट सदस्य मेजर डॉ. गौतम कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि राष्ट्र निर्माण में युवाओं की ऊर्जा और प्रतिभा को सही दिशा देना समय की आवश्यकता है। उन्होंने सेवा, संगठन, सामाजिक समरसता और भारतीय संस्कृति के संरक्षण को विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला बताते हुए युवाओं से राष्ट्रहित के कार्यों में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया। विभाग प्रचारक सुमित जी ने कहा कि सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक चुनौतियों से निपटने के लिए युवाओं को अनुशासन, सकारात्मक सोच और राष्ट्रभक्ति के साथ आगे बढ़ना होगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका पर संगोष्ठी आयोजित

इनसाइट मिथिला

सहरसा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) अपनी स्थापना के 100 वर्ष (शताब्दी वर्ष) पूरे होने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहरसा द्वारा गायत्री शक्तिपीठ में 'युवा संवाद' के तहत राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल, विभाग प्रचारक सुमित जी और सिंडिकेट सदस्य मेजर डॉ. गौतम कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया।संवाद कार्यक्रम में शहर के बड़ी संख्या में युवाओं और प्रबुद्ध नागरिकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। इस संगोष्ठी में मुख्य ट्रस्टी डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने राष्ट्र निर्माण के प्रति युवाओं के दायित्वों और उनकी ऊर्जा को सही दिशा देने पर विशेष जोर दिया। उनहोंने इस कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं को समाज में सकारात्मक बदलाव लाने और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए प्रेरित किया उन्होंने कहा कि सेवा, संगठन, सामाजिक समरसता और भारतीय संस्कृति का संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि संस्कारित, संगठित और जागरूक युवा ही विकसित, आत्मनिर्भर एवं गौरवशाली भारत के निर्माण की मजबूत आधारशिला रख सकते हैं। उन्होंने युवाओं को समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाने और राष्ट्रहित के कार्यों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की प्रेरणा दी। आर एस एस के विभाग प्रचारक सुमितजी. ने कहा कि भारत आज अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों का स्थायी और प्रभावी समाधान तभी संभव है, जब देश का युवा वर्ग राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति सजग बने। उन्होंने युवाओं से सकारात्मक सोच, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति के साथ आगे बढ़ने का आग्रह किया: उन्होंने ने संघ के शताब्दी वर्ष के लक्ष्य 'पंच परिवर्तन' को युवाओं तक पहुँचाया इसके तहत सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्यों का निर्वहन, कुटुंब प्रबोधन (पारिवारिक मूल्य), और स्वदेशी/स्वाभिमान का प्रसार विषय पर विषतार से चर्चा किया ।सिंडिकेट सदस्य मेजर डॉ गौतम कुमार ने कहा कि अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक होती है। उन्होंने कहा कि देश की सुरक्षा, विकास और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में युवाओं का सकारात्मक योगदान अनिवार्य है। उन्होंने युवाओं को अपने व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के प्रति समर्पित रहने का संदेश दिया।इस अवसर पर ज्ञानू, ललन सिंह, प्रखर, मनोज, सनोज सहित भारी संख्या में युवा उपस्थित थे।अंत में सिंडिकेट सदस्य द्वारा संकल्प भी कराया गया

मनुष्य जीवन साधना के चार चरण हैं : अरुण

संवाद सूत्र, जागरण • सहरसा: रविवार को शहर के गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित किया गया। सत्र को संबोधित करते हुए शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा मनुष्य जीवन साधना के चार चरण हैं- पहली स्थिति में तो व्यक्ति के बहुत 'मैं' होते हैं। बात सोचने की है, समझने की है। शायद हमें अभी इसका ख्याल भी न हो कि हमारे भीतर बहुत 'मैं' हैं। आश्चर्यपूर्ण होने पर भी यही जीवन का सच है। तभी तो सुबह कुछ कहते हैं, दोपहर को कुछ कहते हैं और शाम को कुछ कहते हैं। सुबह एक बात का वचन देते हैं, दोपहर भूल जाते हैं। शाम एक बात तय करते हैं, सुबह भूल जाते हैं। सुबह तय किया था, क्रोध नहीं करेंगे, लेकिन बाद में क्रोध करने लगते हैं। उन्होंने कहना है कि सारी गड़बड़ कई 'मैं' के कारण है। जिस 'मैं' ने तय किया था कि क्रोध नहीं करूंगा, वह 'मैं' और था, अब क्रोध करने वाला 'मैं' दूसरा है। उन्होंने कहा कि हमारे भीतर अनेकों 'मैं' की भीड़ है। इसीलिए हमारे व्रत, वचन, संकल्प, प्रतिज्ञाएं सब निरर्थक जाती हैं। क्योंकि

संबोधित करते ट्रस्टी डा. अरूण कुमार जायसवाल • सौजन्य शक्तिपीठ

- गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित
- यह अवस्था है 'मैं' की। यह अपने भीतर एक 'मैं' पैदा करना

एक 'मैं' का कथन दूसरे 'मैं' को स्वीकार नहीं है। उनके अनुसार यह सारे उपद्रव कई 'मैं' के कारण हैं। भगवान महावीर ने इसके लिए समुचित शब्द प्रयोग किया है- बहुचित्तवान, पालीसाइकिक, मल्टीआइज। एक आदमी के भीतर बहुत से चित्त हैं। ट्रस्टी ने कहा कि इसके बाद दूसरी अवस्था है साधना की। यह अवस्था है एक 'मैं' की। यह सारी भीड़ नष्ट करके अपने भीतर एक 'मैं' पैदा करना। जिस व्यक्ति के भीतर एक मैं, एक स्वर पैदा हो गया, उसके व्रत, वचन व संकल्प अर्थपूर्ण हो जाते हैं। वह जो कुछ भी कहेगा, उसे पूरा करेगा। वह टिका रहेगा अपनी बात, अपने व्रत, वचन व संकल्प पर। उसने प्रेम किया है तो प्रेम किया है, अब वह घृणा नहीं कर सकेगा। उसकी यह स्थिरता, एकाग्रता उसके व्रत-वचन व संकल्प को ऊर्जावान बनाती है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री की सुरक्षा में कार्यरत डीएसपी विवेक ने कहा कि यहां का माहौल आध्यात्मिक है। शिक्षा महत्वपूर्ण है, शिक्षा से सफलता मिलेगी। डीएसपी रागिनी ने कहा कि जिन्दगी में कुछ बड़ा करने के लिए लक्ष्य डिसाइड करना चाहिए। द्वितीय सत्र की बैठक में निर्णय लिया गया कि 29 जुलाई को गुरुपूर्णिमा के अवसर पर गुरू पर्व मनाई जाएगी। दिन भर अखंड जप होगी और संध्याकालीन दीप यज्ञ के साथ कार्यक्रम की समाप्ति होगी। साथ ही उपजोन की बैठक 26 जुलाई को सहरसा में होगी। जिसमें पूरे जिले के परिजन भाग लेंगे।

गायत्री शक्तिपीठ • 29जुलाई को गुरु पूर्णिमा पर गुरु पर्व मनाने का निर्णय

व्यक्तित्व परिष्कार के लिए 'मैं' की भीड़ से बाहर निकलना जरूरी

भास्कर न्यूज | सहरसा

शहर के गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि मनुष्य के व्यक्तित्व और साधना का विकास चार चरणों से होकर गुजरता है। पहली अवस्था में व्यक्ति के भीतर कई 'मैं' होते हैं। इसी कारण उसके विचार, वचन और व्यवहार में स्थिरता नहीं रहती। व्यक्ति सुबह जो संकल्प लेता है, उसे दिन में ही भूल जाता है। क्रोध नहीं करने का निर्णय लेने के बावजूद वह क्रोधित हो जाता है, क्योंकि निर्णय लेने वाला 'मैं' और क्रोध करने वाला 'मैं' अलग-अलग होता है।

उन्होंने कहा कि भगवान महावीर ने इस स्थिति को बहुचित्तवान' कहा है, जबकि आधुनिक मनोविज्ञान भी स्वीकार करता है कि मनुष्य के भीतर अनेक मन सक्रिय रहते हैं। साधना का दूसरा चरण इन बिखरे हुए 'मैं'

सत्र को संबोधित करते डॉ. अरूण कुमार जायसवाल।

को समाप्त कर एक ''मैं' का निर्माण करना है। जब व्यक्ति के भीतर विचार, वचन और कर्म में एकरूपता आती है, तभी उसके संकल्प सार्थक होते हैं और वह अपने वचनों पर अडिग रहता है। तीसरा चरण मैं' अर्थात 'नो आई' की अवस्था है, जहां व्यक्ति अहंकार का त्याग करता है। चौथा चरण पूर्ण शून्यता का है, जिसमें मैं' का भी बोध समाप्त हो जाता है। इसी अवस्था में व्यक्ति परमात्मा को पूर्ण रूप से स्वीकार कर संपूर्ण समर्पण का अनुभव कर सकता है। बैठक में 29 जुलाई को गुरुपूर्णिमा के अवसर पर गुरु पर्व मनाने का निर्णय लिया गया।

मनुष्य जीवन दुर्लभ, परमात्मा प्राप्ति के लिए सद्गुरु की शरण जरूरी : स्वामी ओमानंद जी महाराज

संतमत संतसंग में भाग लेते महर्षि मेहीं के संत व अनुयायी।

सौर बाजार (सहरसा)| महर्षि मेंहीं संतमत सत्संग मंदिर कांप बाजार में आयोजित एक दिवसीय प्रखंड मासिक संतमत सत्संग रविवार देर शाम गुरु भजन और संध्या आरती के साथ शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर संस्थापक स्वामी सुनीलानंद महाराज के नेतृत्व में कांप ग्रामवासियों के सहयोग से किया गया। इस अवसर पर सत्संग के साथ भंडारा का भी आयोजन हुआ। शाही स्वामीजी महाराज के परम शिष्य आचार्य स्वामी ओमानंद महाराज ने कहा कि मनुष्य जीवन बार-बार नहीं मिलता। यह परम सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि मनुष्य शरीर मिलने के बाद भी यदि व्यक्ति परमात्मा का भजन और ध्यान नहीं करता तो इससे बड़ा दुर्भाग्य कुछ नहीं हो सकता। उन्होंने परमात्मा प्राप्ति के लिए सद्गुरु महर्षि मेंहीं की शरण में आने का आह्वान किया। स्वामी सुनीलानंद महाराज ने कहा कि जिस स्थान पर सत्संग होता है, वहां ईश्वर प्राप्ति का ज्ञान बांटा जाता है।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन, धार्मिक कार्यक्रमों को लेकर हुई चर्चा

आत्मशुद्धि, एकाग्रता व समर्पण ही आध्यात्मिक उन्नति का वास्तविक मार्ग : डॉ अरुण जायसवाल

प्रतिनिधि, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. इसमें आध्यात्मिक चिंतन, आत्मविकास एवं आगामी धार्मिक कार्यक्रमों को लेकर विस्तार से चर्चा की गयी. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने रूस के प्रसिद्ध संत एवं दार्शनिक जॉर्ज गुरजिएफ के व्यक्तित्व विकास संबंधी सिद्धांतों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मनुष्य के भीतर अनेक "मैं" होने के कारण उसके व्रत, संकल्प एवं निर्णय स्थिर नहीं रह पाते हैं. उन्होंने कहा कि साधना का पहला चरण बहुचित्त अवस्था से बाहर निकलना है, जबकि दूसरा चरण अपने भीतर एक "मैं" का निर्माण करना है. इससे व्यक्ति के विचार, वचन एवं कर्म में एकरूपता आती है तथा उसके संकल्प प्रभावशाली बनते हैं. मुख्यमंत्री सुरक्षा में डीएसपी पद पर कार्यरत विवेक ने कहा कि गायत्री शक्तिपीठ का वातावरण अत्यंत आध्यात्मिक एवं प्रेरणादायी है. डीएसपी रागिनी ने कहा कि जीवन में बड़ी सफलता प्राप्त करने के लिए स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक है. द्वितीय सत्र की बैठक में 29 जुलाई को गुरुपूर्णिमा के अवसर पर गुरु पर्व श्रद्धापूर्वक मनाने का निर्णय लिया गया. साथ ही 26 जुलाई को उपजोन की बैठक आयोजित करने का भी निर्णय लिया गया, जिसमें जिलेभर के गायत्री परिवार के सदस्य भाग लेंगे.

कार्यक्रम मे भाग लेते लोग.

संतों ने प्रवचन में आध्यात्मिक जीवन व सत्संग के महत्व पर दिया बल

- कांप बाजार में प्रखंड स्तरीय संतमत सत्संग का हुआ आयोजन

सौरबाजार. प्रखंड क्षेत्र के महर्षि मेंही संतमत सत्संग मंदिर, कांप बाजार में रविवार को प्रखंड स्तरीय एक दिवसीय संतमत सत्संग का आयोजन किया गया. कार्यक्रम का आयोजन आश्रम के संस्थापक स्वामी सुनीलानंद महाराज के नेतृत्व में संत प्रेमियों एवं स्थानीय ग्रामीणों के सहयोग से किया गया. सत्संग के प्रथम सत्र का आयोजन सुबह छह बजे से 11 बजे तक तथा द्वितीय सत्र का आयोजन अपराह्न तीन बजे से शाम छह बजे तक हुआ. कार्यक्रम में बाबा शाही धाम, दानापुर के आचार्य स्वामी ओमानंद महाराज, संतमत के प्रसिद्ध गायक गुरु शरण सुमन महाराज, स्वामी [illegible] महाराज सहित अन्य संतों ने श्रद्धालुओं को प्रवचन के माध्यम से आध्यात्मिक जीवन का संदेश दिया. द्वितीय सत्र को संबोधित करते हुए स्वामी सुनीलानंद महाराज ने कहा कि संत एवं सत्संग मनुष्य को सत्य और सदाचार का मार्ग दिखाते हैं. सत्संग की समाप्ति के बाद श्रद्धालुओं के बीच महाप्रसाद का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में आयोजन समिति के अध्यक्ष [illegible] यादव, पूर्व पैक्स अध्यक्ष [illegible] यादव, मुखिया [illegible] यादव, पूर्व सरपंच [illegible] मालाकार, अवधेश यादव, [illegible] मालाकार सहित बड़ी संख्या में संतमत प्रेमी एवं ग्रामीण मौजूद थे.

प्रार्थना सभा में उपस्थित संत व अनुयायी.

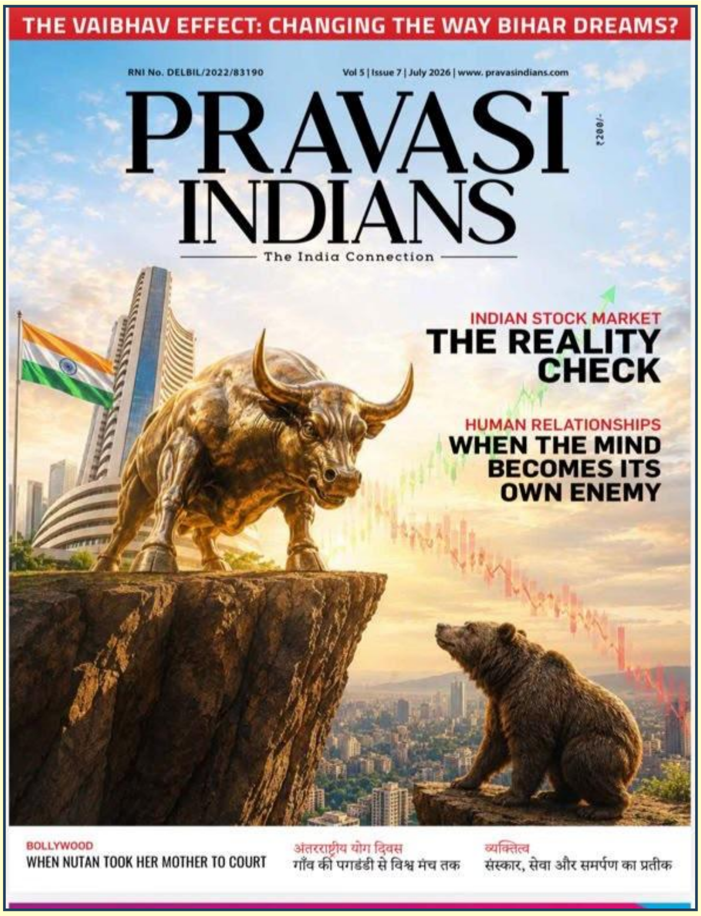

डॉ. अरुण कुमार जायसवाल

संस्कार, सेवा और समर्पण का प्रतीक

वैदिक संस्कृति के प्रचारक, शिक्षक, लेखक, वक्ता, समाजसेवी और सहरसा (बिहार) निवासी डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने अपने जीवन को केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों तक सीमित नहीं रखा। शिक्षा, संस्कार, स्वास्थ्य, पर्यावरण और मानव सेवा के अनेक आयामों में उनका कार्य यह दर्शाता है कि यदि संकल्प स्पष्ट हो तो एक व्यक्ति भी समाज में व्यापक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है।

राकेश कुमार वर्मा

लेखक भारत सरकार के एक वरिष्ठ सेवानिवृत्त अधिकारी हैं, जिन्होंने अपने प्रशासनिक अनुभव और सामाजिक सरोकारों को लेखन के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है।

डॉ. अरुण बिहार के एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जिन्होंने शिक्षक, लेखक, वक्ता, समाजसेवी और मार्गदर्शक के रूप में अपना संपूर्ण जीवन समाज के उत्थान के लिए समर्पित किया है। वैदिक संस्कृति के अध्ययन और उसके वैश्विक प्रचार-प्रसार को उन्होंने अपना जीवन मिशन बनाया है। विशेष रूप से युवाओं में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिकता और सकारात्मक जीवन-दृष्टि को स्थापित करने के लिए वे निरंतर कार्यरत हैं।

देश और विदेश में उनके व्याख्यानों को सुनने के लिए बड़ी संख्या में लोग उत्सुक रहते हैं। प्रतिदिन सैकड़ों लोग अपनी व्यक्तिगत, सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं के समाधान के लिए उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। उनके व्यावहारिक और जीवनोपयोगी सुझावों ने अनेक लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

• शिक्षक के रूप में

डॉ. जायसवाल वर्ष 2013 से बिहार न्यायिक अकादमी में अतिथि संकाय (Guest Faculty) के रूप में नव-नियुक्त न्यायिक अधिकारियों के इंडक्शन प्रशिक्षण से जुड़े हुए हैं। वे 27वीं से 31वीं बैच तक के न्यायिक अधिकारियों को प्रशिक्षण दे चुके हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने एडीजे, सीजीएम, सब-जज, प्रिंसिपल जज तथा जिला एवं सत्र न्यायाधीशों के लिए भी विभिन्न ओरिएंटेशन कार्यक्रमों का संचालन किया है।

वर्ष 2000 से वे युवाओं के लिए नियमित व्यक्तित्व विकास कक्षाओं का संचालन कर रहे हैं। इन कक्षाओं के माध्यम से युवाओं को जीवन प्रबंधन, तनाव प्रबंधन, स्वास्थ्य प्रबंधन, समय प्रबंधन, व्यक्तित्व विकास, नैतिक शिक्षा, सकारात्मक चिंतन, आत्म-अनुशासन तथा लक्ष्य निर्धारण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण दिया जाता है। उनका उद्देश्य युवाओं को भटकाव से बचाकर उनके सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करना है।

• लेखक के रूप में

वर्ष 2000 में हरिद्वार में डॉ. जायसवाल की पहली पुस्तक *भारतीय संस्कृति के विविध आयाम* का विमोचन हिमाचल प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल दिवंगत विष्णुकांत शास्त्री द्वारा किया गया था। यह पुस्तक आज कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भी शामिल है।

उनकी दूसरी पुस्तक *जीवन गीता* का विमोचन 28 अप्रैल 2023 को बिहार के तत्कालीन राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर द्वारा राजभवन, पटना में किया गया। इसके बाद केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे, सांसद दिनेश चंद्र यादव, पूर्व मंत्री अशोक कुमार सिंह तथा विधायक आलोक रंजन सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने पुस्तक का अवलोकन कर इसकी सराहना की।

• वक्ता के रूप में

डॉ. जायसवाल पिछले दो दशकों से राष्ट्रीय और क्षेत्रीय मीडिया में एक परिचित नाम हैं। वर्ष 2006 से वे विभिन्न समाचार चैनलों, विशेषकर आज तक और ईटीवी सहित अनेक मंचों पर अपने विचार रख चुके हैं। उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भारतीय संस्कृति, जीवन मूल्यों और सामाजिक परिवर्तन जैसे विषयों पर प्रभावशाली व्याख्यान दिये हैं॥ कठिन सवालों का जवाब भी वे बड़ी आसानी और सहज भाषा में दे देते हैं। उनके विचार 'आत्महत्या करना महापाप', 'डिजिटल उपवास', 'नारी जागरण का मतलब पुरुष बनना नहीं, पुरुषार्थी बनना है', इत्यादि को YouTube पर भी पढ़ा जा सकता है। जून २०२६ में गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा के तत्वाधान में 'आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी' एक ट्रेनिंग कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है जिसके अंतर्गत मन्दिर के कार्यकर्ताओं को बताया जा रहा है कि गर्भवती महिलाओं को अपनी दिनचर्या में क्या क्या अपनाना चाहिए और किन बातों पर ध्यान देना चाहिए। ये कार्यकर्ता ट्रेनिंग प्रोग्राम के बाद अस्पताल और अन्य स्थानों पर जाकर गर्भवती महिलाओं को जागरूक करने का प्रयास करेंगे।

बाल संस्कारशालाओं, व्यक्तित्व परिष्कार कक्षाओं और निःशुल्क भोजन सेवा जैसे अभियानों के माध्यम से वे समाज के वंचित वर्गों तक आशा, शिक्षा और आत्मविश्वास पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं।

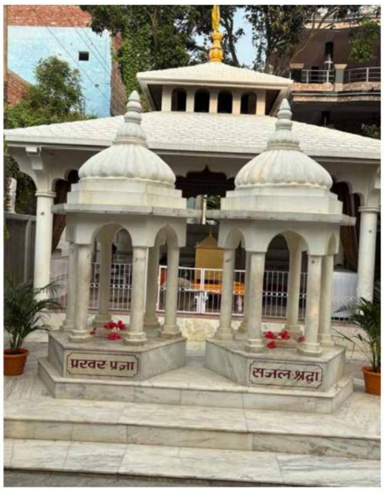

उनकी वक्तृत्व शैली (Oratory/ Elocution style) का प्रमुख गुण यह है कि वे जटिल विषयों को भी सरल, व्यावहारिक और प्रेरणादायक रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे श्रोता सहज रूप से उनसे जुड़ जाते हैं।

• समाजसेवा का व्यापक अभियान

डॉ. जायसवाल के नेतृत्व में कार्यरत युवा टीम शिक्षा, संस्कार, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन और मानव सेवा के क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। उनके प्रमुख सामाजिक अभियानों में निःशुल्क भोजन वितरण, बाल संस्कारशालाओं का संचालन, व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम, योग एवं स्वास्थ्य जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण तथा जन-जागरण अभियान शामिल हैं।

• प्रमुख सामाजिक पहलें

1. जीवन में सेवा-भाव

भारतीय संस्कृति के सेवा-भाव को जीवन में उतारते हुए उनकी टीम वर्ष 2019 से प्रतिदिन सैकड़ों जरूरतमंद लोगों को भोजन उपलब्ध करा रही है। यह अभियान आज भी निरंतर जारी है और समाज के वंचित वर्गों के लिए एक महत्वपूर्ण सहारा बना हुआ है।

2. पर्यावरण संरक्षण

प्लास्टिक प्रतिबंध लागू होने से कई वर्ष पहले ही उन्होंने कपड़े के थैलों के उपयोग को बढ़ावा देने का अभियान शुरू कर दिया था। उनकी टीम ने घर-घर से पुराने कपड़े एकत्रित कर हजारों थैले तैयार किए और उन्हें निःशुल्क वितरित किया। इसके अतिरिक्त वृक्षारोपण, जलाशयों की सफाई और पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम भी नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं।

वैदिक संस्कृति के प्रचार और युवा चेतना के जागरण को अपना जीवन मिशन बनाकर डॉ. अरुण कुमार जायसवाल पिछले दो दशकों से शिक्षा, संस्कार और समाजसेवा के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय हैं।

3. बाल संस्कारशाला

सहरसा में संचालित उनकी बाल संस्कारशालाओं का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों और झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले बच्चों का सर्वांगीण विकास है। यहां बच्चों को शिक्षा के साथ योग, नैतिक मूल्य, अनुशासन और जीवन-कौशल का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। वर्तमान में लगभग 10 संस्कारशालाओं में 1,000 से अधिक बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं।

दिल्ली से प्रकाशित *प्रवासी इंडियंस* मासिक पत्रिका में डॉ. अरुण कुमार जायसवाल एवं गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा की चर्चा।

भुजंगासन

परिचय :-

भुजंगासन (कोबरा मुद्रा) शब्द भुजंग से आया है जिसका अर्थ है साँप। यह आसन सूर्य नमस्कार के साथ साथ पद्म साधना में भी उपस्थित है। भुजंगासन इन और कई अन्य समस्याओं को हल करने का एक समाधान है, भुजंगासन, एक ऐसा आसन है जिसे आप पेट के बल लेटकर करते हैं। यह आपके शरीर (विशेषकर पीठ) को अच्छा खिंचाव देता है, जिससे आपका तनाव लगभग तुरंत दूर हो जाता है!

भुजंगासन करने की विधि :-

अपने पेट के बल लेट जाएँ, अपने पैरों के अंगूठे जमीन पर सपाट रखें, तलवे ऊपर की ओर हों; माथा जमीन पर टिकाएँ।

अपने पैरों को एक दूसरे के पास रखें, तथा अपने पैरों और एड़ियों को एक दूसरे से हल्के से स्पर्श करते रहें। दोनों हाथों को इस प्रकार रखें कि हथेलिययाँ आपके कंधों के नीचे जमीन को छू रही हों तथा कोहनियाँ समानांतर तथा आपके धड़ के पास हों। गहरी साँस लेते हुए धीरे धीरे अपने सिर, छाती और पेट को ऊपर उठाएँ। अपनी नाभि को जमीन पर रखें।

अपने हाथों के सहारे अपने धड़ को पीछे की ओर खींचकर फर्श से ऊपर उठाएँ। ध्यान रखें कि आप दोनों हथेलियों पर समान दबाव डाल रहे हैं। अपनी रीढ़ की हड्डी को एक एक कर के मोड़ते हुए सजगता से साँस लेते रहें। यदि संभव हो तो अपनी पीठ को जितना हो सके उतना झुकाकर अपनी भुजाओं को सीधा करें; अपने सिर को पीछे झुकाएँ और ऊपर देखें। ४-५ बार समान रूप से साँस लेते हुए इस मुद्रा को बनाए रखें। अब साँस छोड़ें और धीरे से अपने पेट, छाती और सिर को फर्श पर वापस लाएँ और विश्राम करें। ४-५ बार दोहराएँ।

सावधानियां :-

गर्भावस्था, हर्निया, अल्सर या पेट के हालिया ऑपरेशन वाले लोगों को यह आसन नहीं करना चाहिए। यदि आपको गंभीर कमर दर्द या कलाई में चोट हो, तो किसी विशेषज्ञ की देखरेख में ही करें।

समय :-

यह प्राणायाम सुबह, दोपहर और शाम, कभी भी किया जा सकता है, विशेषकर जब शरीर में गर्मी महसूस हो।

लाभ :-

कंधों और गर्दन के दर्द से राहत दिलाता है। संपूर्ण पीठ और कंधों को मजबूत बनाता है। ऊपरी और मध्य पीठ के लचीलेपन में सुधार करता है। छाती को फैलाता है। रक्त परिसंचरण में सुधार करता है। थकान और तनाव कम करता है।

अस्थमा जैसे श्वसन संबंधी विकारों से पीड़ित लोगों के लिए उपयोगी है।

माह जुलाई में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- श्री राकेश कुमार (पूर्व रॉ डायरेक्टर) - साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- श्री रंजीत कुमार झा (पूर्व जीएम) - साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- श्री प्रकाश ठाकुर (व्यवसायी, सहरसा) - साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- श्री अशोक जी (सहरसा) - साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- श्री सुमित जी (आरएसएस के विभाग प्रचारक) - साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- मेजर प्रोफेसर डॉ गौतम (सहरसा) - साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- श्री विवेक दीप (डीएसपी, मुख्यमंत्री सुरक्षा, पटना) - साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- श्रीमती रागिनी (डीएसपी, एटीएस, पटना) - साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।

आगामी कार्यक्रम

प्रत्येक रविवार - व्यक्तित्व परिष्कार सत्र

02 अगस्त - विशेष भोजन

3 अगस्त - श्रावण पहला सोमवार

10 अगस्त - श्रावण दूसरा सोमवार, प्रदोष व्रत (कृष्ण पक्ष)

11 अगस्त - मास शिवरात्रि

15 अगस्त - स्वतंत्रता दिवस

17 अगस्त - श्रावण तीसरा सोमवार, नाग पंचमी

24 अगस्त - श्रावण चौथा सोमवार

25 अगस्त - प्रदोष व्रत (शुक्ल पक्ष)

28 अगस्त - श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबंधन

अंतिम रविवार – जिले के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में 24 नए घरों में गायत्री यज्ञ, पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधों का वितरण, सद्विचारों के प्रसार हेतु अखंड ज्योति पत्रिका का वितरण तथा प्रेरक सद्वाक्यों के पठन के लिए दीवार लेखन, नए घरों में सुख, शांति एवं समृद्धि के लिए गायत्री यज्ञ।

शिवजी कितने प्यारे प्यारे

शिवजी कितने प्यारे प्यारे, लगते कितने भोले-भाले
उनको जब भी देखें हम तो, लगते जैसे सद्यःजात वे । शिवजी कितने प्यारे प्यारे -------------
शिवजी की ही, ये दुनिया है, यही तो हमारा सत्य ज्ञान है
शिवजी हमारे प्राण समान हैं उन्हीं का हम करते मान हैं
औरों को क्या कुछ मिला है, इस विषय में सोचते कहाँ है
बस देखें हम शिवजी को ही, और कहाँ नजरें उठाएँ । शिवजी कितने प्यारे-प्यारे ---------------
शिवजी के बिन दुनिया सूनी, झाङ-झँखाङ इसमें भरे हैं
लगती है यह श्मशान जैसी, सुनसान सी जिसकी डगर है ।
शिवजी को ही भज ले मानव, हँस ले और हँसा ले मानव
सुनना है तो सुन ले मानव,और नहीं हम कुछ भी कहते ।। शिवजी कितने प्यारे प्यारे -------------
शिव से ही कोई बनता है चन्दन, शिव से ही होता है वन्दन
शिव मुस्काते अन्तर में जब, होता उसका सतत अभिनन्दन
चन्दन-वन्दन छोङ भी दो तो, शिव बिन नहीं मुस्काता नन्दन
शिव नहीं हँसते अन्तर में तो, होता है इस जग में क्रन्दन ।। शिवजी कितने प्यारे प्यारे -----------
शिव की यह दुनिया है न्यारी, लगती हमको प्यारी - प्यारी
शिव विभु हैं, हम उनकी विभुता, यही तो कहती हमारी भक्ति
भक्ति में जो रस है प्रियवर, वह नहीं कहीं है प्रियवर
फिर क्योंकर मन को तुम जलाते, शिव को ही क्यों नहीं बसाते ।। शिवजी कितने प्यारे प्यारे ---------
शिव से ही बनोगे पावन, यह अकाट्य एक सत्य जान लो
शिव अखण्ड हैं, शिव परम हैं, शिव हैं तो यह दुनिया सावन
शिव अजर हैं, शिव अमर हैं, शिव ही तो हैं भावन-मनभावन
शिव नहीं तो समझो मानव, मन में कहीं छुपा है रावण ।। शिवजी कितने प्यारे-प्यारे -------------
शिव को ही पूजो जगवालों, शिव में ही रमो जगवालों
शिव की कृपा को तरसो जगवालों, शिव से आशीष पा लो जगवालों
शिव की ही हमसब सन्तति हैं, शिव नहीं तो कहाँ गति है
शिव से ही कर लो रति तुम, शिव से ही पा लो सन्मति तुम ।। शिव जी कितने प्यारे-प्यारे -------

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)
संपर्क सूत्र	:	06478-228787, 9470454241
Email	:	gspsaharsa@gmail.com
Website	:	https://gsps.co.in/
Social Connect	:	https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39 https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/